आयातुहा 111 | 17 सूरतु बनी इसराई-ल मक्कियतुन 50 | रुकूआ़तुहा 12

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रह़म फ़रमानेवाला है।

سُبْحٰنَ الَّذِيْٓ اَسْرٰى بِعَبْدِهٖ لَيْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اِلَى الْمَسْجِدِ الْاَقْصَا الَّذِيْ بٰرَكْنَا حَوْلَهٗ لِنُرِيَهٗ مِنْ اٰيٰتِنَا ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ①

1. वोह ज़ात (हर नक़्स और कमज़ोरीसे) पाक है जो रात के थोड़ेसे हि़स्से में अपने (मह्बूब और मुक़र्रब) बन्देको मस्जिदे ह़रामसे (उस) मस्जिदे अक़्सा तक ले गई जिसके गिर्दो नवाह़ को हमने बा बरकत बना दिया है ताकि हम उस (बंदए कामिल) को अपनी निशानियां दिखाएं, बेशक वोही ख़ूब सुननेवाला ख़ूब देखने वाला है।

وَاٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَجَعَلْنٰهُ هُدًى لِّبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اَلَّا تَتَّخِذُوْا مِنْ دُوْنِيْ وَكِيْلًا ؕ ②

2. और हमने मूसा (عليه السلام) को किताब (तौरात) अ़ता की और हमने उसे बनी इसराईल के लिए हिदायत बनाया (और उन्हें हुक्म दिया) कि तुम मेरे सिवा किसी को कारसाज़ न ठेहराओ।

ذُرِّيَّةَ مَنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ ؕ اِنَّهٗ كَانَ عَبْدًا شَكُوْرًا ③

3. (ऐ) उन लोगों की औलाद जिन्हें हमने नूह़ (عليه السلام) के साथ (कश्ती में) उठा लिया था, बेशक नूह़ (عليه السلام) बड़े शुक्रगुज़ार बन्दे थे।

وَقَضَيْنَآ اِلٰى بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ فِي الْكِتٰبِ لَتُفْسِدُنَّ فِي الْاَرْضِ مَرَّتَيْنِ وَلَتَعْلُنَّ عُلُوًّا كَبِيْرًا ④

4. और हमने किताब में बनी इसराईल को क़त्ई तौर पर बता दिया था कि तुम ज़मीन में ज़रूर दो मर्तबा फ़साद करोगे और (इताअ़ते इलाही से) बड़ी सरकशी बर्तोगे।

فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ اُوْلٰىهُمَا بَعَثْنَا عَلَيْكُمْ عِبَادًا لَّنَآ اُولِيْ بَاْسٍ شَدِيْدٍ فَجَاسُوْا خِلٰلَ الدِّيَارِ ؕ وَكَانَ وَعْدًا مَّفْعُوْلًا ⑤

5. फिर जब उन दोनों में से पहली मर्तबा का वा'दा आ पहुंचा तो हमने तुम पर अपने ऐसे बंदे मुसल्लत कर दिए जो सख़्त जंगजू थे फिर वोह (तुम्हारी) तलाश में (तुम्हारे) घरों तक जा घुसे, और (येह) वा'दा ज़रूर पूरा होना ही था।

ثُمَّ رَدَدْنَا لَكُمُ الْكَرَّةَ عَلَيْهِمْ
وَ اَمْدَدْنٰكُمْ بِاَمْوَالٍ وَّبَنِيْنَ
وَجَعَلْنٰكُمْ اَكْثَرَ نَفِيْرًا ۝٦
اِنْ اَحْسَنْتُمْ اَحْسَنْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ ۫ وَ
اِنْ اَسَاْتُمْ فَلَهَا ؕ فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ
الْاٰخِرَةِ لِيَسُوْٓءٗا وُجُوْهَكُمْ وَ
لِيَدْخُلُوا الْمَسْجِدَ كَمَا دَخَلُوْهُ اَوَّلَ
مَرَّةٍ وَّلِيُتَبِّرُوْا مَا عَلَوْا تَتْبِيْرًا ۝٧
عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يَّرْحَمَكُمْ ۚ وَ اِنْ
عُدْتُّمْ عُدْنَا ۘ وَ جَعَلْنَا جَهَنَّمَ
لِلْكٰفِرِيْنَ حَصِيْرًا ۝٨
اِنَّ هٰذَا الْقُرْاٰنَ يَهْدِيْ لِلَّتِيْ هِيَ
اَقْوَمُ وَيُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِيْنَ الَّذِيْنَ
يَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ اَجْرًا
كَبِيْرًا ۝٩
وَّاَنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ
اَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۝١٠ ع ١١
وَ يَدْعُ الْاِنْسَانُ بِالشَّرِّ دُعَآءَهٗ
بِالْخَيْرِ ؕ وَكَانَ الْاِنْسَانُ عَجُوْلًا ۝١١

6. फिर हमने उनके ऊपर ग़ल्बे को तुम्हारे हक़में पलटा दिया और हमने अमवालो औलाद (की कसरत) के ज़रीए तुम्हारी मदद फ़रमाई और हमने तुम्हें अफ़रादी कुव्वत में (भी) बढ़ा दिया।

7. अगर तुम भलाई करोगे तो अपने (ही) लिए भलाई करोगे और अगर तुम बुराई करोगे तो अपनी (ही) जान के लिए, फिर जब दूसरे वा'देकी घड़ी आई (तो और ज़ालिमों को तुम पर मुसल्लत कर दिया) ताकि (मार मार कर) तुम्हारे चेहरे बिगाड़ दें और ताकि मस्जिदे अक़्सा में (उसी तरह) दाख़िल हों जैसे उसमें (हम्ला आवर लोग) पहली मर्तबा दाख़िल हुए थे और ताकि जिस (मुक़ाम) पर ग़ल्बा पाएं उसे तबाहो बरबाद कर डालें।

8. उम्मीद है (उसके बाद) तुम्हारा रब तुम पर रहम फ़रमाएगा और अगर तुमने फिर वोही (सरकशी का तर्ज़े अमल इख़्तियार) किया तो हम भी वोही (अज़ाब दोबारा) करेंगे, और हमने दोज़ख़ को काफ़िरों के लिए क़ैदख़ाना बना दिया है।

9. बेशक येह क़ुरआन उस (मंज़िल) की रहनुमाई करता है जो सबसे दुरुस्त है और उन मोमिनोंको जो नेक अमल करते हैं इस बातकी ख़ुश ख़बरी सुनाता है कि उनके लिए बड़ा अज्र है।

10. और येह कि जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते हमने उनके लिए दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है।

11. और इन्सान (कभी तंग दिल और परेशान हो कर) बुराईकी दुआ मांगने लगता है जिस तरह (अपने लिए) भलाई की दुआ मांगता है, और इन्सान बड़ा ही जल्दबाज़ वाक़े' हुवा है।

وقفلازم

وَجَعَلْنَا الَّيْلَ وَالنَّهَارَ اٰيَتَيْنِ فَمَحَوْنَآ اٰيَةَ الَّيْلِ وَجَعَلْنَآ اٰيَةَ النَّهَارِ مُبْصِرَةً لِّتَبْتَغُوْا فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكُمْ وَلِتَعْلَمُوْا عَدَدَ السِّنِيْنَ وَالْحِسَابَ ؕ وَكُلَّ شَيْءٍ فَصَّلْنٰهُ تَفْصِيْلًا ﴿۱۲﴾

12. और हमने रात और दिनको (अपनी क़ुदरतकी) दो निशानियां बनाया फिर हमने रातकी निशानी को तारीक बनाया और हमने दिनकी निशानीको रौशन बनाया ताकि तुम अपने रबका फ़ज़्ल (रिज़्क़) तलाश कर सको और ताकि तुम बरसोंका शुमार और हिसाब मा'लूम कर सको, और हमने हर चीज़को पूरी तफ़्सील से वाज़ेह़ कर दिया है।

وَكُلَّ اِنْسَانٍ اَلْزَمْنٰهُ طٰٓئِرَهٗ فِيْ عُنُقِهٖ ؕ وَنُخْرِجُ لَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ كِتٰبًا يَّلْقٰىهُ مَنْشُوْرًا ﴿۱۳﴾

13. और हमने हर इन्सानके आ'मालका नविश्ता उसकी गरदनमें लटका दिया है, और हम उसके लिए क़ियामतके दिन (येह) नामए आ'माल निकालेंगे जिसे वोह (अपने सामने) खुला हुवा पाएगा।

اِقْرَاْ كِتٰبَكَ ؕ كَفٰى بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيْبًا ﴿۱۴﴾ ؕ

14. (उससे कहा जाएगा) अपनी किताबे (आ'माल) पढ़ ले, आज तू अपना हिसाब जाँचने के लिए खुदही काफ़ी है।

مَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِيْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ؕ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ؕ وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِيْنَ حَتّٰى نَبْعَثَ رَسُوْلًا ﴿۱۵﴾

15. जो कोई राहे हिदायत इख़्तियार करता है तो वोह अपने फ़ाइदे के लिए हिदायत पर चलता है और जो शख़्स गुमराह होता है तो उसकी गुमराही का वबाल (भी) उसी पर है, और कोई बोझ उठानेवाला किसी दूसरे (के गुनाहों) का बोझ नहीं उठाएगा, और हम हरगिज़ अ़ज़ाब देनेवाले नहीं हैं यहां तक कि हम (उस क़ौममें) किसी रसूलको भेज लें।

وَاِذَآ اَرَدْنَآ اَنْ نُّهْلِكَ قَرْيَةً اَمَرْنَا مُتْرَفِيْهَا فَفَسَقُوْا فِيْهَا فَحَقَّ عَلَيْهَا الْقَوْلُ فَدَمَّرْنٰهَا تَدْمِيْرًا ﴿۱۶﴾

16. और जब हम किसी बस्तीको हलाक करनेका इरादा करते हैं तो हम वहांके उमरा और खुशह़ाल लोगोंको (कोई) हुक्म देते हैं (ताकि उनके ज़रीए अ़वाम और गुरबा भी दुरुस्त हो जाएं) तो वोह उस (बस्ती) में ना फ़रमानी करते हैं पस उस पर हमारा फ़रमाने (अ़ज़ाब) वाजिब हो जाता है फिर हम उस बस्तीको बिल्कुल ही मिस्मार कर देते हैं।

وَكَمْ اَهْلَكْنَا مِنَ الْقُرُوْنِ مِنْۢ بَعْدِ نُوْحٍ ؕ وَكَفٰى بِرَبِّكَ بِذُنُوْبِ عِبَادِهٖ خَبِيْرًۢا بَصِيْرًا ﴿۱۷﴾

17. और हमने नूह (अलैहिस्सलाम) के बाद कितनी ही क़ौमोंको हलाक कर डाला, और आपका रब काफ़ी है (वोह) अपने बंदों के गुनाहोंसे ख़ूब ख़बरदार ख़ूब देखनेवाला है।

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْعَاجِلَةَ عَجَّلْنَا لَهٗ فِيْهَا مَا نَشَآءُ لِمَنْ نُّرِيْدُ ثُمَّ جَعَلْنَا لَهٗ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلٰىهَا مَذْمُوْمًا مَّدْحُوْرًا ﴿۱۸﴾

18. जो कोई सिर्फ़ दुनियाकी ख़ुशहाली (की सूरतमें अपनी मेहनतका जल्दी बदला) चाहता है तो हम इसी दुनियामें जिसे चाहते हैं जितना चाहते हैं जल्दी दे देते हैं फिर हमने उसके लिए दोज़ख़ बना दी है जिसमें वोह मलामत सुनता हुआ (रबकी रह़मतसे) घुत्कारा हुआ दाख़िल होगा।

وَمَنْ اَرَادَ الْاٰخِرَةَ وَسَعٰى لَهَا سَعْيَهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ كَانَ سَعْيُهُمْ مَّشْكُوْرًا ﴿۱۹﴾

19. और जो शख़्स आख़िरतका ख़्वाहिशमंद हुआ और उसने उसके लिए उसके लाइक़ कोशिश की और वोह मोमिन (भी) है तो ऐसे ही लोगोंकी कोशिश मक़्बूलियत पाएगी।

كُلًّا نُّمِدُّ هٰٓؤُلَآءِ وَهٰٓؤُلَآءِ مِنْ عَطَآءِ رَبِّكَ ؕ وَمَا كَانَ عَطَآءُ رَبِّكَ مَحْظُوْرًا ﴿۲۰﴾

20. हम हर एक की मदद करते हैं उन (तालिबाने दुनिया) की भी और उन (तालिबाने आख़िरत) की भी (ऐ ह़बीबे मुकर्रम ! येह सब कुछ) आपके रबकी अ़तासे है, और आपके रबकी अ़ता (किसी के लिए) मम्नूअ़ और बंद नहीं है।

اُنْظُرْ كَيْفَ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ؕ وَلَلْاٰخِرَةُ اَكْبَرُ دَرَجٰتٍ وَّاَكْبَرُ تَفْضِيْلًا ﴿۲۱﴾

21. देखिए हमने उनमें से बा'ज़ को बा'ज़ पर किस तरह फ़ज़ीलत दे रखी है, और यक़ीनन आख़िरत (दुनियाके मुक़ाबलेमें) दरजातके लिहाज़से (भी) बहुत बड़ी है और फ़ज़ीलतके लिहाज़से (भी) बहुत बड़ी है।

لَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتَقْعُدَ مَذْمُوْمًا مَّخْذُوْلًا ﴿۲۲﴾ ع ۲ ۱۲ ۲

22. (ऐ सुननेवाले!) अल्लाहके साथ दूसरा मा'बूद न बना (वर्ना) तू मलामत ज़दह (और) बे यारो मददगार हो कर बैठा रेह जाएगा।

وَقَضٰى رَبُّكَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ

23. और आपके रबने हुक्म फ़रमा दिया है कि तुम

اِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا ؕ اِمَّا
يَبْلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ اَحَدُهُمَآ اَوْ
كِلٰهُمَا فَلَا تَقُلْ لَّهُمَآ اُفٍّ وَّلَا تَنْهَرْ
هُمَا وَقُلْ لَّهُمَا قَوْلًا كَرِيْمًا ﴿٢٣﴾

अल्लाहके सिवा किसीकी इबादत मत करो और वालिदैन के साथ हुस्ने सुलूक किया करो, अगर तुम्हारे सामने दोनोंमें से कोई एक या दोनों बुढ़ापे को पहुंच जाएं तो उन्हें ''उफ़'' भी न केहना और उन्हें झिड़कना भी नहीं और उन दोनोंके साथ बड़े अदब से बात किया करो।

وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ
الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَّبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا
رَبَّيٰنِيْ صَغِيْرًا ﴿٢٤﴾ ؕ

24. और उन दोनों के लिए नरम दिली से इज्ज़ो इन्किसारीके बाजू झुकाए रखो और (अल्लाहके हुजूर) अर्ज़ करते रहो ऐ मेरे रब ! उन दोनों पर रहम फ़रमा जैसा कि उन्होंने बचपन में मुझे (रहमतो शफ़्क़त से) पाला था।

رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَا فِيْ نُفُوْسِكُمْ ؕ اِنْ
تَكُوْنُوْا صٰلِحِيْنَ فَاِنَّهٗ كَانَ
لِلْاَوَّابِيْنَ غَفُوْرًا ﴿٢٥﴾

25. तुम्हारा रब उन (बातों) से खूब आगाह है जो तुम्हारे दिलोंमें है, अगर तुम नेक सीरत हो जाओ तो बेशक वोह (अल्लाह अपनी तरफ़) रुजूअ करनेवालों को बहुत बख़्शनेवाला है।

وَاٰتِ ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهٗ وَالْمِسْكِيْنَ وَ
ابْنَ السَّبِيْلِ وَلَا تُبَذِّرْ تَبْذِيْرًا ﴿٢٦﴾

26. और क़राबत दारों को उनका हक़ अदा करो और मोहताजों और मुसाफ़िरों को भी (दो) और (अपना माल) फ़ुजूल ख़र्चीसे मत उड़ाओ।

اِنَّ الْمُبَذِّرِيْنَ كَانُوْٓا اِخْوَانَ
الشَّيٰطِيْنِ ؕ وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِرَبِّهٖ
كَفُوْرًا ﴿٢٧﴾

27. बेशक फ़ुजूल ख़र्ची करनेवाले शैतानके भाई हैं, और शैतान अपने रबका बड़ा ही ना शुक्रा है।

وَاِمَّا تُعْرِضَنَّ عَنْهُمُ ابْتِغَآءَ
رَحْمَةٍ مِّنْ رَّبِّكَ تَرْجُوْهَا فَقُلْ
لَّهُمْ قَوْلًا مَّيْسُوْرًا ﴿٢٨﴾

28.और अगर तुम (अपनी तंगदस्ती के बाइस) उन (मुस्तहिक़ीन) से गुरेज़ करना चाहते हो अपने रबकी जानिबसे रहमत (खुशहाली) के इन्तिज़ारमें जिसकी तुम तवक़्क़ो' रखते हो तो उनसे नरमीकी बात केह दिया करो।

وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُوْلَةً اِلٰى

29. और न अपना हाथ अपनी गरदनसे बांधा हुवा रखो

عُنُقِكَ وَ لَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبَسْطِ
فَتَقْعُدَ مَلُوْمًا مَّحْسُوْرًا ﴿۲۹﴾

(कि किसीको कुछ न दो) और न ही उसे सारा का सारा खोल दो (कि सब कुछ ही दे डालो) कि फिर तुम्हें ख़ुद मलामत ज़दह (और) थका हारा बन कर बैठना पड़े।

اِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ
يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ؕ اِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ
خَبِيْرًۢا بَصِيْرًا ﴿۳۰﴾ ع ۳ ۸ ۳

30. बेशक आपका रब जिसके लिए चाहता है रिज़्क़ कुशादह फ़रमा देता है और (जिसके लिए चाहता है) तंग कर देता है, बेशक वोह अपने बन्दों (के आ'मालो अह्वाल) की ख़ूब ख़बर रखनेवाला ख़ूब देखनेवाला है।

وَ لَا تَقْتُلُوْۤا اَوْلَادَكُمْ خَشْيَةَ
اِمْلَاقٍ ؕ نَحْنُ نَرْزُقُهُمْ وَاِيَّاكُمْ ؕ
اِنَّ قَتْلَهُمْ كَانَ خِطْاً كَبِيْرًا ﴿۳۱﴾

31. और तुम अपनी औलाद को मुफ़लिसीके ख़ौफ़से क़त्ल मत करो, हम ही उन्हें (भी) रोज़ी देते हैं और तुम्हें भी, बेशक उनको क़त्ल करना बहुत बड़ा गुनाह है।

وَ لَا تَقْرَبُوا الزِّنٰۤى اِنَّهٗ كَانَ
فَاحِشَةً ؕ وَسَآءَ سَبِيْلًا ﴿۳۲﴾

32. तुम ज़िना (बदकारी) के क़रीब भी मत जाना बेशक येह बे हयाई का काम है, और बहुत ही बुरी राह है।

وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ
اِلَّا بِالْحَقِّ ؕ وَمَنْ قُتِلَ مَظْلُوْمًا
فَقَدْ جَعَلْنَا لِوَلِيِّهٖ سُلْطٰنًا فَلَا
يُسْرِفْ فِّي الْقَتْلِ ؕ اِنَّهٗ كَانَ
مَنْصُوْرًا ﴿۳۳﴾

33. तुम किसी जानको क़त्ल मत करना जिसे (क़त्ल करना) अल्लाहने ह़राम क़रार दिया है सिवाए उसके कि (उसका क़त्ल करना शरीअ़त की रूसे) ह़क़ हो, और जो शख़्स ज़ुल्मन क़त्ल कर दिया गया तो बेशक हमने उसके वारिस के लिए (क़िसास का) ह़क़ मुक़र्रर कर दिया है सो वोह भी (क़िसास के तौर पर बदलेके) क़त्लमें ह़दसे तजावुज़ न करे, बेशक वोह (अल्लाहकी तरफ़से) मदद याफ़्ता है (सो उसकी मददो ह़िमायत की ज़िम्मेदारी ह़ुकूमत पर होगी)।

وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ اِلَّا بِالَّتِيْ
هِيَ اَحْسَنُ حَتّٰى يَبْلُغَ اَشُدَّهٗ ۪
وَاَوْفُوْا بِالْعَهْدِ ۚ اِنَّ الْعَهْدَ كَانَ
مَسْـُٔوْلًا ﴿۳۴﴾

34. और तुम यतीमके मालके (भी) क़रीब तक न जाना मगर ऐसे तरीक़ेसे जो (यतीम के लिए) बेहतर हो यहां तक कि वोह अपनी जवानीको पहुंच जाए और वा'दा पूरा किया करो, बेशक वा'दे की ज़रूर पूछ गछ होगी।

وَ اَوْفُوا الْكَيْلَ اِذَا كِلْتُمْ وَزِنُوْا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيْمِ ؕ ذٰلِكَ خَيْرٌ وَّ اَحْسَنُ تَاْوِيْلًا ﴿۳۵﴾

35. और नाप पूरा रखा करो जब (भी) तुम (कोई चीज़) नापो और (जब तोलने लगो तो) सीधे तराजूसे तोला करो, येह (दयानतदारी) बेहतर है और अंजामके ए'तिबारसे (भी) ख़ूबतर है।

وَ لَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ؕ اِنَّ السَّمْعَ وَ الْبَصَرَ وَ الْفُؤَادَ كُلُّ اُولٰٓئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْئُوْلًا ﴿۳۶﴾

36. और (ऐ इन्सान !) तू इस बातकी पैरवी न कर जिसका तुझे (सहीह़) इ़ल्म नहीं, बेशक कान और आँख और दिल इनमें से हर एकसे बाज़पुर्स होगी।

وَ لَا تَمْشِ فِي الْاَرْضِ مَرَحًا ۚ اِنَّكَ لَنْ تَخْرِقَ الْاَرْضَ وَ لَنْ تَبْلُغَ الْجِبَالَ طُوْلًا ﴿۳۷﴾

37. और ज़मीन में अकड़ कर मत चल, बेशक तू ज़मीन को (अपनी रुऊ़नतके ज़ोर से) हरगिज़ चीर नहीं सक्ता और न ही हरगिज़ तू बुलंदी में पहाड़ों को पहुंच सक्ता है (तू जो कुछ है वोही रहेगा)।

كُلُّ ذٰلِكَ كَانَ سَيِّئُهٗ عِنْدَ رَبِّكَ مَكْرُوْهًا ﴿۳۸﴾

38. इन सब (मज़कूरह) बातोंकी बुराई तेरे रबको बड़ी नापसंद है।

ذٰلِكَ مِمَّاۤ اَوْحٰۤى اِلَيْكَ رَبُّكَ مِنَ الْحِكْمَةِ ؕ وَ لَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتُلْقٰى فِيْ جَهَنَّمَ مَلُوْمًا مَّدْحُوْرًا ﴿۳۹﴾

39. येह हिक्मतो दानाईकी उन बातों में से है जो आपके रबने आपकी तरफ़ वही फ़रमाई हैं, और (ऐ इन्सान!) अल्लाहके साथ कोई दूसरा मा'बूद न ठेहरा (वरना) तू मलामत ज़दह (और अल्लाह की रह़मतसे) धुत्कारा हुवा हो कर दोज़ख़में झोंक दिया जाएगा।

اَفَاَصْفٰىكُمْ رَبُّكُمْ بِالْبَنِيْنَ وَ اتَّخَذَ مِنَ الْمَلٰٓئِكَةِ اِنَاثًا ؕ اِنَّكُمْ لَتَقُوْلُوْنَ قَوْلًا عَظِيْمًا ﴿۴۰﴾ ع ۴ ۴

40. (ऐ मुशरीको, ख़ुद सोचो !) भला तुम्हें तो तुम्हारे रबने बेटोंके लिए चुन लिया है और (अपने लिए) उसने फ़रिश्तोंको बेटियां बना लिया है, बेशक तुम (अपने ही घड़े हुए ख़यालातके पैमाने पर) बड़ी सख़्त बात केहते हो।

وَ لَقَدْ صَرَّفْنَا فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لِيَذَّكَّرُوْا ؕ وَ مَا يَزِيْدُهُمْ اِلَّا

41. और बेशक हमने इस क़ुरआनमें (ह़क़ाईक़ और नसाएह़ को) अंदाज़ बदल कर बार बार बयान किया है ताकि लोग नसीह़त ह़ासिल करें, मगर (मुन्किरीन का

نُفُوْرًا ﴿٤١﴾

आ़लम येह है कि) उससे उनकी नफ़रत ही मज़ीद बढ़ती जाती है।

قُلْ لَّوْ كَانَ مَعَهٗۤ اٰلِهَةٌ كَمَا يَقُوْلُوْنَ اِذًا لَّابْتَغَوْا اِلٰى ذِى الْعَرْشِ سَبِيْلًا ﴿٤٢﴾

42. फ़रमा दीजिए : अगर उसके साथ कुछ और भी मा'बूद होते जैसा कि वोह (कुफ़्फ़ारो मुशरिकीन) केहते हैं तो वोह (मिल कर) मालिके अ़र्श तक पहुंचने (या'नी उसके निज़ामे इक़्तिदार में दख़ल अंदाज़ी करने) का कोई रास्ता ज़रूर तलाश कर लेते।

سُبْحٰنَهٗ وَ تَعٰلٰى عَمَّا يَقُوْلُوْنَ عُلُوًّا كَبِيْرًا ﴿٤٣﴾

43. वोह पाक है और उन बातोंसे जो वोह केहते रेहते हैं बहुत ही बुलंदो बरतर है।

تُسَبِّحُ لَهُ السَّمٰوٰتُ السَّبْعُ وَ الْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهِنَّ ؕ وَ اِنْ مِّنْ شَىْءٍ اِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهٖ وَ لٰكِنْ لَّا تَفْقَهُوْنَ تَسْبِيْحَهُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ حَلِيْمًا غَفُوْرًا ﴿٤٤﴾

44. सातों आस्मान और ज़मीन और वोह सारे मौजूदात जो उनमें हैं अल्लाहकी तस्बीह़ करते रेहते हैं, और (जुम्ला काइनातमें) कोई भी चीज़ ऐसी नहीं जो उसकी ह़म्दके साथ तस्बीह़ न करती हो लेकिन तुम उनकी तस्बीह़ (की कैफ़ियत) को समझ नहीं सक्ते, बेशक वोह बड़ा बुर्दबार बड़ा बख़्शनेवाला है।

وَ اِذَا قَرَاْتَ الْقُرْاٰنَ جَعَلْنَا بَيْنَكَ وَ بَيْنَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ حِجَابًا مَّسْتُوْرًا ۙ﴿٤٥﴾

45. और जब आप क़ुरआन पढ़ते हैं (तो) हम आपके और उन लोगोंके दरमियान जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते एक पोशीदह पर्दा ह़ाइल कर देते हैं।

وَّ جَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَ فِىْۤ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ؕ وَ اِذَا ذَكَرْتَ رَبَّكَ فِى الْقُرْاٰنِ وَحْدَهٗ وَلَّوْا عَلٰۤى اَدْبَارِهِمْ نُفُوْرًا ﴿٤٦﴾

46.और हम उनके दिलों पर (भी) पर्दे डाल देते हैं ताकि वोह उसे समझ (न) सकें और उनके कानों में बोझ पैदा कर देते हैं (ताकि उसे सुन न सकें), और जब आप क़ुरआन में अपने रबका तन्हा ज़िक्र करते हैं (उनके बुतोंका नाम नहीं आता) तो वोह नफ़रत करते हुऐ पीठ फेर कर भाग खड़े होते हैं।

نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَسْتَمِعُوْنَ بِهٖۤ اِذْ

47.हम ख़ूब जानते हैं येह जिस मक़्सद के लिए ध्यान से

يَسْتَمِعُوْنَ اِلَيْكَ وَ اِذْهُمْ نَجْوٰٓى اِذْ يَقُوْلُ الظّٰلِمُوْنَ اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا رَجُلًا مَّسْحُوْرًا ﴿٤٧﴾

सुनते हैं जब येह आपकी तरफ़ कान लगाते हैं और जब येह सरगोशियां करते हैं जब येह ज़ालिम लोग (मुसलमानों से) केहते हैं कि तुम तो महज़ एक ऐसे शख़्सकी पैरवी कर रहे हो जो सहर ज़दा है (या'नी उस पर जादू कर दिया गया है तो हम येह सब कुछ देख और सुन रहे होते हैं)।

اُنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوْا لَكَ الْاَمْثَالَ فَضَلُّوْا فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَبِيْلًا ﴿٤٨﴾

48. (ऐ ह़बीब!) देखिए (येह लोग) आपके लिए कैसी (कैसी) तश्बीहें देते हैं पस येह गुमराह हो चुके, अब राहे रास्त पर नहीं आ सक्ते।

وَ قَالُوْٓا ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا وَّ رُفَاتًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ خَلْقًا جَدِيْدًا ﴿٤٩﴾

49. और केहते हैं जब हम (मर कर बोसीदह) हड्डियां और रेज़ा रेज़ा हो जाएंगे तो क्या हमें अज़ सरे नव पैदा कर के उठाया जाएगा ?

قُلْ كُوْنُوْا حِجَارَةً اَوْ حَدِيْدًا ﴿٥٠﴾ۙ

50. फ़रमा दीजिए : तुम पथ्थर हो जाओ या लोहा।

اَوْ خَلْقًا مِّمَّا يَكْبُرُ فِيْ صُدُوْرِكُمْ ۚ فَسَيَقُوْلُوْنَ مَنْ يُّعِيْدُنَا ؕ قُلِ الَّذِيْ فَطَرَكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ فَسَيُنْغِضُوْنَ اِلَيْكَ رُءُوْسَهُمْ وَ يَقُوْلُوْنَ مَتٰى هُوَ ؕ قُلْ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ قَرِيْبًا ﴿٥١﴾

51. या कोई ऐसी मख़्लूक़ जो तुम्हारे ख़यालमें (इन चीज़ोंसे भी) ज़ियादह सख़्त हो (कि उसमें ज़िन्दगी पानेकी बिल्कुल सलाहियत ही न हो) फिर वोह (उस ह़ाल में) कहेंगे कि हमें कौन दोबारा ज़िन्दा करेगा? फ़रमा दीजिए : वोही जिसने तुम्हें पेहली बार पैदा फ़रमाया था, फिर वोह (तअ़ज्जुब और तमस्ख़ुर के तौर पर) आपके सामने अपने सर हिला देंगे और कहेंगे : येह कब होगा? फ़रमा दीजिए : उम्मीद है जल्द ही हो जाएगा।

يَوْمَ يَدْعُوْكُمْ فَتَسْتَجِيْبُوْنَ بِحَمْدِهٖ وَتَظُنُّوْنَ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٥٢﴾ ع ١٢ ١٥

52. जिस दिन वोह तुम्हें पुकारेगा तो तुम उसकी ह़म्दके साथ जवाब दोगे और ख़याल करते होगे कि तुम (दुनिया में) बहुत थोड़ा अ़र्सा ठेहरे हो।

وَ قُلْ لِّعِبَادِيْ يَقُوْلُوا الَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ ؕ اِنَّ الشَّيْطٰنَ يَنْزَغُ

53. और आप मेरे बंदों से फ़रमादें कि वोह ऐसी बातें किया करें जो बेहतर हों, बेशक शैतान लोगों के

بَيْنَهُمْ ؕ اِنَّ الشَّيْطٰنَ كَانَ لِلْاِنْسَانِ
عَدُوًّا مُّبِيْنًا ﴿٥٣﴾

दरमियान फ़साद बपा करता है, यक़ीनन शैतान इन्सानका खुला दुश्मन है।

رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِكُمْ ؕ اِنْ يَّشَاْ
يَرْحَمْكُمْ اَوْ اِنْ يَّشَاْ يُعَذِّبْكُمْ ؕ
وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ وَكِيْلًا ﴿٥٤﴾

54. तुम्हारा रब तुम्हारे ह़ाल से बेहतर वाक़िफ़ है, अगर चाहे तुम पर रह़म फ़रमा दे या अगर चाहे तुम पर अ़ज़ाब करे, और हमने आपको उन पर (उनके उमूरका) ज़िम्मेदार बना कर नहीं भेजा।

وَرَبُّكَ اَعْلَمُ بِمَنْ فِي السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ ؕ وَلَقَدْ فَضَّلْنَا بَعْضَ
النَّبِيّٖنَ عَلٰى بَعْضٍ وَّ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ
زَبُوْرًا ﴿٥٥﴾

55.और आपका रब उनको ख़ूब जानता है जो आस्मानों और ज़मीन में (आबाद) हैं, और बेशक हमने बा'ज़ अंबियाको बा'ज़ पर फ़ज़ीलत बख़्शी और हमने दाऊद (عليه السلام) को ज़बूर अ़ता की।

قُلِ ادْعُوا الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ مِّنْ
دُوْنِهٖ فَلَا يَمْلِكُوْنَ كَشْفَ الضُّرِّ عَنْكُمْ
وَلَا تَحْوِيْلًا ﴿٥٦﴾

56. फ़रमा दीजिए : तुम उन सबको बुला लो जिन्हें तुम अल्लाहके सिवा (मा'बूद) गुमान करते हो वोह तुमसे तक्लीफ़ दूर करने पर क़ादिर नहीं हैं और न (उसे दूसरोंकी तरफ़) फेर देनेका (इख़्तियार रखते हैं)।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ يَبْتَغُوْنَ
اِلٰى رَبِّهِمُ الْوَسِيْلَةَ اَيُّهُمْ اَقْرَبُ
وَيَرْجُوْنَ رَحْمَتَهٗ وَيَخَافُوْنَ
عَذَابَهٗ ؕ اِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ
مَحْذُوْرًا ﴿٥٧﴾

57. येह लोग जिनकी इबादत करते हैं (या'नी मलाइका, जिन्नात, ईसा और उ़ज़ैर (عليه السلام) वग़ैरहुम के बुत और तस्वीरें बना कर उन्हें पूजते हैं) वोह (तो ख़ुदही) अपने रबकी तरफ़ वसीले तलाश करते हैं कि उनमें से (बारगाहे इलाहीमें) ज़ियादह मुक़र्रब कौन है और (वोह ख़ुदही) उसकी रह़मतके उम्मीदवार हैं और (वोह ख़ुदही) उसके अ़ज़ाबसे डरते रेहते हैं, (अब तुम ही बताओ कि वोह मा'बूद कैसे हो सक्ते हैं वोह तो ख़ुद मा'बूदे बरह़क़ के सामने झुक रहे हैं), बेशक आपके रबका अ़ज़ाब डरनेकी चीज़ है।

وَ اِنْ مِّنْ قَرْيَةٍ اِلَّا نَحْنُ

58.और (कुफ़्रो सरकशी करने वालोंकी) कोई बस्ती

مُهْلِكُوْهَا قَبْلَ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ اَوْ مُعَذِّبُوْهَا عَذَابًا شَدِيْدًا ؕ كَانَ ذٰلِكَ فِي الْكِتٰبِ مَسْطُوْرًا ﴿۵۸﴾

ऐसी नहीं मगर हम उसे रोज़े क़ियामतसे क़ब्लही तबाह कर देंगे या उसे निहायत ही सख्त अ़ज़ाब देंगे, येह (अम्र) किताब (लौहे़ महफ़ूज़) में लिखा हुआ है।

وَ مَا مَنَعَنَاۤ اَنْ نُّرْسِلَ بِالْاٰيٰتِ اِلَّاۤ اَنْ كَذَّبَ بِهَا الْاَوَّلُوْنَ ؕ وَ اٰتَيْنَا ثَمُوْدَ النَّاقَةَ مُبْصِرَةً فَظَلَمُوْا بِهَا ؕ وَ مَا نُرْسِلُ بِالْاٰيٰتِ اِلَّا تَخْوِيْفًا ﴿۵۹﴾

59. और हमको (अबभी उनके मुतालिबे पर) निशानियां भेजने से (किसी चीज़ने) मना' नहीं किया सिवाए इसके कि उन्हीं (निशानियों) को पहले लोगोंने झुटला दिया था (सो उसके बाद वोह फ़ौरन तबाहो बरबाद कर दिए गए और कोई मोहलत बाक़ी न रही, ऐ हबीब ! हम आपकी बे'सत के बाद आपकी क़ौमसे येह मुआ़मला नहीं करना चाहते), और हमने क़ौमे समूदको (सालेह ﷺ की) ऊंटनी (की) खुली निशानी दी थी तो उन्होंने उस पर ज़ुल्म किया, और हम निशानियां नहीं भेजा करते मगर (अ़ज़ाब की आमदसे क़ब्ल आख़री बार) ख़ौफ़ज़दा करने के लिए (फिर जब उस निशानीका इन्कार हो जाता है तो उसी वक़्त तबाहकुन अ़ज़ाब भेज दिया जाता है)।

وَ اِذْ قُلْنَا لَكَ اِنَّ رَبَّكَ اَحَاطَ بِالنَّاسِ ؕ وَمَا جَعَلْنَا الرُّءْيَا الَّتِيْۤ اَرَيْنٰكَ اِلَّا فِتْنَةً لِّلنَّاسِ وَالشَّجَرَةَ الْمَلْعُوْنَةَ فِي الْقُرْاٰنِ ؕ وَ نُخَوِّفُهُمْ ۙ فَمَا يَزِيْدُهُمْ اِلَّا طُغْيَانًا كَبِيْرًا ﴿۶۰﴾ ع ۶ ۸ ۶

60.और (याद कीजिऐ) जब हमने आपसे फ़रमाया कि बेशक आपके रबने (सब) लोगोंको (अपने इल्मो क़ुदरत के) अहा़ते में ले रखा है, और हमने तो (शबे मे'राजके) उस नज़्ज़ारेको जो हमने आपको दिखाया लोगों के लिए सिर्फ़ एक आज़माइश बनाया है (ईमानवाले मान गए और ज़ाहिरबीन उलझ गए) और उस दरख़्त (शजरतुज़ ज़क़्क़ूम) को भी जिस पर क़ुरआनमें ला'नत की गई है, और हम उन्हें डराते हैं मगर येह (डराना भी) उनमें कोई इज़ाफ़ा नहीं करता सिवाए और बड़ी सरकशी के।

وَ اِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْۤا اِلَّاۤ اِبْلِيْسَ ؕ قَالَ

61. और (वोह वक़्त याद कीजिए) जब हमने फ़रिश्तोंसे फ़रमाया कि तुम आदम (ﷺ) को सजदा करो तो इबलीस के सिवा सबने सजदा किया, उसने कहा :

ءَاَسْجُدُ لِمَنْ خَلَقْتَ طِيْنًا ﴿٦١﴾

क्या उसे सजदा करूं जिसे तूने मिट्टीसे पैदा किया है?

قَالَ اَرَءَيْتَكَ هٰذَا الَّذِيْ كَرَّمْتَ عَلَيَّ ۖ لَئِنْ اَخَّرْتَنِ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَاَحْتَنِكَنَّ ذُرِّيَّتَهٗٓ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٦٢﴾

62. (और शैतान येह भी केहने लगा :) मुझे बता तो सही कि येह वोह शख़्स है जिसे तूने मुझ पर फ़ज़ीलत दी है? (आख़िर इसकी क्या वजह है?) अगर तू मुझे क़ियामतके दिन तक मोह्लत दे दे तो मैं इसकी औलादको सिवाए चंद अफ़रादके (अपने क़ब्जेमें ले कर) जड़से उखाड़ दूंगा।

قَالَ اذْهَبْ فَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ فَاِنَّ جَهَنَّمَ جَزَآؤُكُمْ جَزَآءً مَّوْفُوْرًا ﴿٦٣﴾

63. अल्लाहने फ़रमाया : जा (तुझे मोहलत है) पस उनमें से जो भी तेरी पैरवी करेगा तो बेशक दोज़ख़ (ही) तुम सबकी पूरी पूरी सज़ा है।

وَاسْتَفْزِزْ مَنِ اسْتَطَعْتَ مِنْهُمْ بِصَوْتِكَ وَاَجْلِبْ عَلَيْهِمْ بِخَيْلِكَ وَرَجِلِكَ وَشَارِكْهُمْ فِي الْاَمْوَالِ وَالْاَوْلَادِ وَعِدْهُمْ ۭ وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطٰنُ اِلَّا غُرُوْرًا ﴿٦٤﴾

64. और जिस पर भी तेरा बस चल सक्ता है तू (उसे) अपनी आवाज़से डगमगा ले और उन पर अपनी (फ़ौजके) सवार और पियादा दस्तों को चढ़ा दे और उनके मालो औलादमें उनका शरीक बन जा और उनसे (झूटे) वा'दे कर, और उनसे शैतान धोकाओ फ़रेबके सिवा (कोई) वा'दा नहीं करता।

اِنَّ عِبَادِيْ لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنٌ ۭ وَكَفٰى بِرَبِّكَ وَكِيْلًا ﴿٦٥﴾

65. बेशक जो मेरे बन्दे हैं उन पर तेरा तसल्लुत नहीं हो सकेगा, और तेरा रब उन (अल्लाहवालों) की कारसाज़ी के लिए काफ़ी है।

رَبُّكُمُ الَّذِيْ يُزْجِيْ لَكُمُ الْفُلْكَ فِي الْبَحْرِ لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ ۭ اِنَّهٗ كَانَ بِكُمْ رَحِيْمًا ﴿٦٦﴾

66. तुम्हारा रब वोह है जो समन्दर (और दरिया) में तुम्हारे लिए (जहाज़ और) कश्तियां रवां फ़रमाता है ताकि तुम (अंदरूनी-व-बैरूनी तिजारत के ज़रीए) उसका फ़ज़्ल (या'नी रिज़्क़) तलाश करो, बेशक वोह तुम पर बड़ा महरबान है।

وَاِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فِي الْبَحْرِ ضَلَّ مَنْ تَدْعُوْنَ اِلَّآ اِيَّاهُ ۚ فَلَمَّا

67. और जब समन्दर में तुम्हें कोई मुसीबत लाहिक़ होती है तो वोह (सब बुत तुम्हारे ज़ेहनों से) गुम हो जाते हैं

نَجّٰىكُمْ اِلَى الْبَرِّ اَعْرَضْتُمْ ۭ
وَكَانَ الْاِنْسَانُ كَفُوْرًا ﴿٦٧﴾

जिनकी तुम परस्तिश करते रेहते हो सिवाए उसी (अल्लाह) के (जिसे तुम उस वक़्त याद करते हो), फिर जब वोह (अल्लाह) तुम्हें बचा कर ख़ुश्की की तरफ़ ले जाता है (तो फिर उससे) रू गर्दानी करने लगते हो, और इन्सान बड़ा नाशुक्रा वाक़े' हुआ है।

اَفَاَمِنْتُمْ اَنْ يَّخْسِفَ بِكُمْ جَانِبَ
الْبَرِّ اَوْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ثُمَّ
لَا تَجِدُوْا لَكُمْ وَكِيْلًا ﴿٦٨﴾

68.क्या तुम उस बातसे बेख़ौफ़ हो गए हो कि वोह तुम्हें ख़ुश्कीके किनारे पर ही (ज़मीनमें) धंसा दे या तुम पर पथ्थर बरसानेवाली आँधी भेज दे फिर तुम अपने लिए कोई कारसाज़ न पा सकोगे।

اَمْ اَمِنْتُمْ اَنْ يُّعِيْدَكُمْ فِيْهِ تَارَةً
اُخْرٰى فَيُرْسِلَ عَلَيْكُمْ قَاصِفًا مِّنَ
الرِّيْحِ فَيُغْرِقَكُمْ بِمَا كَفَرْتُمْ ۙ ثُمَّ
لَا تَجِدُوْا لَكُمْ عَلَيْنَا بِهٖ تَبِيْعًا ﴿٦٩﴾

69.या तुम उस बातसे बेख़ौफ़ हो गए हो कि वोह तुम्हें दोबारा उस (समन्दर) में पलटा कर ले जाए और तुम पर कश्तियां तोड़ देनेवाली आँधी भेज दे फिर तुम्हें उस कुफ़्र के बाइस जो तुम करते थे (समन्दर में) ग़र्क़ कर दे फिर तुम अपने लिए उस (डूबने) पर हमसे मुआख़ज़ा करनेवाला कोई नहीं पाओगे।

وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِيْٓ اٰدَمَ وَحَمَلْنٰهُمْ فِي
الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ
الطَّيِّبٰتِ وَفَضَّلْنٰهُمْ عَلٰى كَثِيْرٍ مِّمَّنْ
خَلَقْنَا تَفْضِيْلًا ﴿٧٠﴾

70.और बेशक हमने बनी आदमको इ़ज़्ज़त बख़्शी और हमने उनको ख़ुश्की और तरी (या'नी शहरों और सेहराओं और समन्दरों और दरियाओं) में (मुख़्तलिफ़ सवारियों पर) सवार किया और हमने उन्हें पाकीज़ा चीज़ोंसे रिज़्क़ अ़ता किया और हमने उन्हें अक्सर मख़्लूक़ात पर जिन्हें हमने पैदा किया है फ़ज़ीलत दे कर बरतर बना दिया।

يَوْمَ نَدْعُوْا كُلَّ اُنَاسٍۢ بِاِمَامِهِمْ ۚ
فَمَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ فَاُولٰۗىِٕكَ
يَقْرَءُوْنَ كِتٰبَهُمْ وَلَا يُظْلَمُوْنَ
فَتِيْلًا ﴿٧١﴾

71. वोह दिन (याद करें) जब हम लोगोंके हर तब्क़े को उनके पेशवा के साथ बुलाएंगे, सो जिसे उसका नविश्तए आ'माल उसके दाएं हाथमें दिया जाएगा पस येह लोग अपना नामाए आ'माल (मसर्रतो शादमानीसे) पढ़ेंगे और उन पर धागे बराबर भी ज़ुल्म नहीं किया जाएगा।

وَمَنْ كَانَ فِيْ هٰذِهٖٓ اَعْمٰى فَهُوَ فِي
الْاٰخِرَةِ اَعْمٰى وَاَضَلُّ سَبِيْلًا ﴿٧٢﴾

72.और जो शख़्स इस (दुनिया) में (हक़से) अँधा रहा सो वोह आख़िरत में भी अँधा और राहे (नजात) से भटका रहेगा।

وَاِنْ كَادُوْا لَيَفْتِنُوْنَكَ عَنِ الَّذِيْٓ
اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ لِتَفْتَرِيَ عَلَيْنَا
غَيْرَهٗ ۖ وَاِذًا لَّاتَّخَذُوْكَ خَلِيْلًا ﴿٧٣﴾

73.और कुफ़्फ़ार तो येही चाहते थे कि आपको उस (हुक्मे इलाही) से फेर दें जिसकी हमने आपकी तरफ़ वही फ़रमाई है ताकि आप उस (वही) के सिवा हम पर कुछ और (बातों) को मन्सूब कर दें और तब आपको अपना दोस्त बना लें।

وَلَوْلَآ اَنْ ثَبَّتْنٰكَ لَقَدْ كِدْتَّ
تَرْكَنُ اِلَيْهِمْ شَيْـًٔا قَلِيْلًا ﴿٧٤﴾

74. और अगर हमने आपको (पहले ही से इस्मते नुबुव्वतके ज़रीए) साबित क़दम न बनाया होता तो तब भी आप उनकी तरफ़ (अपने पाकीज़ा नफ़्स और तबई इस्ते'दाद के बाइस) बहुत ही मा'मूली से झुकाव के क़रीब जाते। (उनकी तरफ़ फिर भी ज़ियादह माइल न होते और नाकाम रेहते मगर अल्लाहने आपको इस्मते नुबुव्वत के ज़रीए उस मा'मूलीसे मैलान के क़रीब जाने से भी महफ़ूज फ़रमा लिया है)।

اِذًا لَّاَذَقْنٰكَ ضِعْفَ الْحَيٰوةِ وَ
ضِعْفَ الْمَمَاتِ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ
عَلَيْنَا نَصِيْرًا ﴿٧٥﴾

75. (अगर बिलफ़र्ज़ आप माइल हो जाते तो) उस वक़्त हम आपको दोगुना मज़ा ज़िन्दगीमें और दोगुना मौतमें चखाते फिर आप अपने लिए (भी) हम पर कोई मददगार न पाते।

وَاِنْ كَادُوْا لَيَسْتَفِزُّوْنَكَ مِنَ
الْاَرْضِ لِيُخْرِجُوْكَ مِنْهَا وَاِذًا
لَّا يَلْبَثُوْنَ خِلٰفَكَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٧٦﴾

76.और कुफ़्फ़ार येह भी चाहते थे कि आपके क़दम सर ज़मीने (मक्का) से उखाड़ दें ताकि वोह आपको यहां से निकाल सकें और (अगर बिलफ़र्ज़ ऐसा हो जाता तो) उस वक़्त वोह (खुद भी) आपके पीछे थोड़ी सी मुद्दतके सिवा ठहर न सक्ते।

سُنَّةَ مَنْ قَدْ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنْ
رُّسُلِنَا وَلَا تَجِدُ لِسُنَّتِنَا
تَحْوِيْلًا ﴿٧٧﴾ ع ٨

77. उन सब रसूलों (के लिए अल्लाह) का दस्तूर (येही रहा है) जिन्हें हमने आपसे पहले भेजा था और आप हमारे दस्तूर में कोई तब्दीली नहीं पाएंगे।

اَقِمِ الصَّلٰوةَ لِدُلُوْكِ الشَّمْسِ اِلٰى غَسَقِ الَّيْلِ وَ قُرْاٰنَ الْفَجْرِ ؕ اِنَّ قُرْاٰنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُوْدًا ﴿۷۸﴾

78. आप सूरज ढलनेसे ले कर रातकी तारीकी तक (ज़ोहर, अ़सर, मग़रिब और इ़शाकी) नमाज़ क़ाइम फ़रमाया करें और नमाज़े फ़ज्रका क़ुरआन पढ़ना भी (लाज़िम कर लें), बेशक नमाज़े फ़ज्रके क़ुरआन में (फ़रिश्तोंकी) ह़ाज़िरी होती है (और ह़ुज़ूरी भी नसीब होती है)।

وَ مِنَ الَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهٖ نَافِلَةً لَّكَ ۖ عَسٰۤى اَنْ يَّبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا ﴿۷۹﴾

79.और रातके कुछ ह़िस्सेमें (भी) क़ुरआन के साथ (शब खे़ज़ी करते हुए) नमाज़े तहज्जुद पढ़ा करें येह ख़ास आपके लिए ज़ियादह (की गई) है यक़ीनन आपका रब आपको मक़ामे महमूद पर फ़ाइज़ फ़रमाएगा (या'नी वोह मक़ामे शफ़ाअ़ते उ़ज़मा जहां जुम्ला अव्वलीनो आख़िरीन आपकी तरफ़ रुजूअ़ और आपकी ह़म्द करेंगे)।

وَ قُلْ رَّبِّ اَدْخِلْنِىْ مُدْخَلَ صِدْقٍ وَّ اَخْرِجْنِىْ مُخْرَجَ صِدْقٍ وَّ اجْعَلْ لِّىْ مِنْ لَّدُنْكَ سُلْطٰنًا نَّصِيْرًا ﴿۸۰﴾

80. और आप (अपने रबके ह़ुज़ूर येह) अ़र्ज़ करते रहें : ऐ मेरे रब ! मुझे सच्चाई (ख़ुशनूदी) के साथ दाख़िल फ़रमा (जहां भी दाख़िल फ़रमाना हो) और मुझे सच्चाई (व ख़ूशनूदी) के साथ बाहर ले आ (जहांसे भी लाना हो) और मुझे अपनी जानिबसे मददगार ग़ल्बा-व-क़ुव्वत अ़ता फ़रमा दे।

وَ قُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَ زَهَقَ الْبَاطِلُ ؕ اِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوْقًا ﴿۸۱﴾

81. और फ़रमा दीजिए ह़क़ आ गया और बातिल भाग गया, बेशक बातिलने ज़ाइलो नाबूद ही हो जाना है।

وَ نُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّ رَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۙ وَ لَا يَزِيْدُ الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا خَسَارًا ﴿۸۲﴾

82. और हम क़ुरआनमें वोह चीज़ नाज़िल फ़रमा रहे हैं जो ईमानवालों के लिए शिफ़ा और रह़मत है और ज़ालिमों के लिए तो सिर्फ़ नुक़्सान ही में इज़ाफ़ा कर रहा है।

وَ اِذَاۤ اَنْعَمْنَا عَلَى الْاِنْسَانِ اَعْرَضَ وَ نَاٰ بِجَانِبِهٖ ۚ وَ اِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ كَانَ يَـُٔوْسًا ﴿۸۳﴾

83. और जब हम इन्सान पर (कोई) इन्आ़म फ़रमाते हैं तो वोह (शुक्रसे) गुरेज़ करता और पहलू तही कर जाता है और जब उसे कोई तक्लीफ़ पहुंच जाती है तो मायूस हो जाता है (गोया न शाकिर है न साबिर)।

ع ١٠ ٩

قُلْ كُلٌّ يَّعْمَلُ عَلٰى شَاكِلَتِهٖ ؕ فَرَبُّكُمْ
اَعْلَمُ بِمَنْ هُوَ اَهْدٰى سَبِيْلًا ﴿٨٤﴾

84. फ़रमा दीजिए : हर कोई (अपने अपने तरीक़े-व-फ़ित्रत पर अ़मल पैरा है, और आपका रब ख़ूब जानता है कि सबसे ज़ियादह सीधी राह पर कौन है।

وَ يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الرُّوْحِ ؕ قُلِ
الرُّوْحُ مِنْ اَمْرِ رَبِّیْ وَ مَاۤ اُوْتِيْتُمْ
مِّنَ الْعِلْمِ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٨٥﴾

85. और येह (कुफ़्फ़ार) आपसे रूहके मु-त-अ़ल्लिक़ सवाल करते है, फ़रमा दीजिए : रूह मेरे रबके अम्रसे है और तुम्हें बहुत ही थोड़ा सा इ़ल्म दिया गया है।

وَ لَئِنْ شِئْنَا لَنَذْهَبَنَّ بِالَّذِیْۤ
اَوْحَيْنَاۤ اِلَيْكَ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ بِهٖ
عَلَيْنَا وَكِيْلًا ۙ ﴿٨٦﴾

86. और अगर हम चाहें तो उस (किताब) को जो हमने आपकी तरफ़ वह़ी फ़रमाई है (लोगोंके दिलों और तेह़रीरी नुस्ख़ोंसे) मह़्व फ़रमा दें फिर आप अपने लिए उस (वह़ी) के ले जाने पर हमारी बारगाह में कोई वकालत करनेवाला भी न पाएंगे।

اِلَّا رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ؕ اِنَّ فَضْلَهٗ
كَانَ عَلَيْكَ كَبِيْرًا ﴿٨٧﴾

87. मगर येह आपके रबकी रह़्मतसे (हमने उसे क़ाइम रखा है), बेशक (येह) आप पर (और आपके वसीलेसे आपकी उम्मत पर) उसका बहुत बड़ा फ़ज़्ल है।

قُلْ لَّئِنِ اجْتَمَعَتِ الْاِنْسُ وَ الْجِنُّ
عَلٰۤى اَنْ يَّاْتُوْا بِمِثْلِ هٰذَا الْقُرْاٰنِ
لَا يَاْتُوْنَ بِمِثْلِهٖ وَ لَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ
لِبَعْضٍ ظَهِيْرًا ﴿٨٨﴾

88.फ़रमा दीजिए : अगर तमाम इन्सान और जिन्नात इस बात पर जमा' हो जाएं कि वोह इस कुरआन के मिस्ल (कोई दूसरा कलाम बना) लाएंगे तो (भी) वोह इसकी मिस्ल नहीं ला सक्ते अगरचे वोह एक दूसरे के मददगार बन जाएं।

وَ لَقَدْ صَرَّفْنَا لِلنَّاسِ فِیْ هٰذَا
الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ؗ فَاَبٰۤى اَكْثَرُ
النَّاسِ اِلَّا كُفُوْرًا ﴿٨٩﴾

89. और बेशक हमने इस कुरआनमें लोगों के लिए हर तरह़ की मिसाल (मुख़्तलिफ़ तरीक़ोंसे) बारबार बयान की है मगर अक्सर लोगोंने (उसे) क़ुबूल न किया (येह) सिवाए ना शुक्री के (और कुछ नहीं)।

وَ قَالُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ حَتّٰى تَفْجُرَ
لَنَا مِنَ الْاَرْضِ يَنْۢبُوْعًا ۙ ﴿٩٠﴾

90. और वोह (कुफ़्फ़ारे मक्का) केहते हैं कि हम आप पर हरगिज़ ईमान नहीं लाएंगे यहां तक कि आप हमारे लिए ज़मीन से कोई चश्मा जारी कर दें।

اَوْ تَكُوْنَ لَكَ جَنَّةٌ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّ عِنَبٍ فَتُفَجِّرَ الْاَنْهٰرَ خِلٰلَهَا تَفْجِيْرًا ﴿٩١﴾

91. या आपके पास खजूरों और अंगूरों का कोई बाग़ हो तो आप उसके अंदर बेहती हुई नेहरें जारी कर दें।

اَوْ تُسْقِطَ السَّمَآءَ كَمَا زَعَمْتَ عَلَيْنَا كِسَفًا اَوْ تَاْتِيَ بِاللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ قَبِيْلًا ﴿٩٢﴾

92. या जैसा कि आपका ख़याल है हम पर (अभी) आस्मान के चंद टुकड़े गिरा दें या आप अल्लाह को और फ़रिश्तों को हमारे सामने ले आएं।

اَوْ يَكُوْنَ لَكَ بَيْتٌ مِّنْ زُخْرُفٍ اَوْ تَرْقٰى فِي السَّمَآءِ ؕ وَلَنْ نُّؤْمِنَ لِرُقِيِّكَ حَتّٰى تُنَزِّلَ عَلَيْنَا كِتٰبًا نَّقْرَؤُهٗ ؕ قُلْ سُبْحَانَ رَبِّيْ هَلْ كُنْتُ اِلَّا بَشَرًا رَّسُوْلًا ﴿٩٣﴾ ع ٩ ١٠

93. या आपका कोई सोनेका घर हो (जिसमें आप ख़ूब ऐशसे रहें) या आप आस्मान पर चढ़ जाएं, फिर भी हम आपके (आस्मान में) चढ़ जाने पर हरगिज़ ईमान नहीं लाएंगे यहां तक कि आप (वहांसे) हमारे ऊपर कोई किताब उतार लाएं जिसे हम (ख़ुद) पढ़ सकें, फ़रमा दीजिए : मेरा रब (इन ख़ुराफ़ातमें उलझनेसे) पाक है मैं तो एक इन्सान (और) अल्लाहका भेजा हुवा (रसूल) हूं।

وَ مَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ يُّؤْمِنُوْٓا اِذْ جَآءَهُمُ الْهُدٰٓى اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اَبَعَثَ اللّٰهُ بَشَرًا رَّسُوْلًا ﴿٩٤﴾

94. और (उन) लोगोंको ईमान लानेसे और कोई चीज़ माने' न हुई जब कि उनके पास हिदायत (भी) आ चुकी थी सिवाए इसके कि वोह केहने लगे : क्या अल्लाहने (एक) बशरको रसूल बना कर भेजा है?

قُلْ لَّوْ كَانَ فِي الْاَرْضِ مَلٰٓئِكَةٌ يَّمْشُوْنَ مُطْمَئِنِّيْنَ لَنَزَّلْنَا عَلَيْهِمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَلَكًا رَّسُوْلًا ﴿٩٥﴾

95. फ़रमा दीजिए : अगर ज़मीन में (इन्सानों की बजाए) फ़रिश्ते चलते फिरते सुकूनत पज़ीर होते तो यक़ीनन हम (भी) उन पर आस्मानसे किसी फ़रिश्ते को रसूल बना कर उतारते।

قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا بَيْنِيْ وَ بَيْنَكُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًا بَصِيْرًا ﴿٩٦﴾

96. फ़रमा दीजिए : मेरे और तुम्हारे दरमियान अल्लाह ही गवाह के तौर पर काफ़ी है, बेशक वोह अपने बंदोंसे ख़ूब आगाह ख़ूब देखनेवाला है।

وَمَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۚ وَمَنْ
يُّضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ اَوْلِيَآءَ مِنْ
دُوْنِهٖ ؕ وَنَحْشُرُهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَلٰى
وُجُوْهِهِمْ عُمْيًا وَّ بُكْمًا وَّ صُمًّا ؕ
مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ كُلَّمَا خَبَتْ زِدْنٰهُمْ
سَعِيْرًا ﴿٩٧﴾

97. और अल्लाह जिसे हिदायत फ़रमा दे तो वोही हिदायत याफ़्ता है, और जिसे वोह गुमराह ठेहरा दे तो आप उनके लिए उसके सिवा मददगार नहीं पाएंगे, और हम उन्हें क़ियामत के दिन औंधे मुंह उठाएंगे इस ह़ालमें कि वोह अँधे, गूंगे और बेहरे होंगे, उनका ठिकाना दोज़ख़ है, जब भी वोह बुझने लगेगी हम उन्हें (अ़ज़ाब देने के लिए) और ज़ियादह भड़का देंगे।

النصف

ذٰلِكَ جَزَآؤُهُمْ بِاَنَّهُمْ كَفَرُوْا
بِاٰيٰتِنَا وَقَالُوْٓا ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا وَّ
رُفَاتًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ خَلْقًا
جَدِيْدًا ﴿٩٨﴾

98. येह उन लोगों की सज़ा है इस वजह से कि उन्होंने हमारी आयतों से कुफ़्र किया और येह केहते रहे कि क्या जब हम (मर कर बोसीदह) हड्डियां और और रेज़ा रेज़ा हो जाएंगे ? तो क्या हम अज़ सरे नव पैदा कर के उठाए जाएंगे ?

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِيْ خَلَقَ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ قَادِرٌ عَلٰٓى اَنْ
يَّخْلُقَ مِثْلَهُمْ وَجَعَلَ لَهُمْ اَجَلًا
لَّا رَيْبَ فِيْهِ ؕ فَاَبَى الظّٰلِمُوْنَ اِلَّا
كُفُوْرًا ﴿٩٩﴾

99. क्या उन्होंने नहीं देखा कि जिस अल्लाहने आस्मानों और ज़मीनको पैदा फ़रमाया है (वोह) इस बात पर (भी) क़ादिर है कि वोह उन लोगोंकी मिस्ल (दोबारा) पैदा फ़रमा दे और उसने उनके लिए एक वक़्त मुक़र्रर फ़रमा दिया है जिसमें कोई शक नहीं, फिर भी ज़ालिमोंने इन्कार कर दिया है मगर (येह) ना शुक्री है।

قُلْ لَّوْ اَنْتُمْ تَمْلِكُوْنَ خَزَآئِنَ
رَحْمَةِ رَبِّيْٓ اِذًا لَّاَمْسَكْتُمْ خَشْيَةَ
الْاِنْفَاقِ ؕ وَكَانَ الْاِنْسَانُ قَتُوْرًا ﴿١٠٠﴾ ع ١١

100. फ़रमा दीजिए : अगर तुम मेरे रबकी रह़मत के ख़ज़ानों के मालिक होते तो तबभी (सब) ख़र्च हो जाने के ख़ौफ़से तुम (अपने हाथ) रोके रखते, और इन्सान बहुतही तंगदिल और बख़ील वाके' हुआ है।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى تِسْعَ اٰيٰتٍۭ
بَيِّنٰتٍ فَسْـَٔلْ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اِذْ
جَآءَهُمْ فَقَالَ لَهٗ فِرْعَوْنُ اِنِّيْ

101. और बेशक हमने मूसा (علیہ السلام) को नव रौशन निशानियां दीं तो आप बनी इसराईल से पूछिए जब (मूसा علیہ السلام) उनके पास आए तो फ़िरऔ़न ने उन से कहा : मैं तो येही ख़याल करता हूं कि ऐ मूसा ! तुम सहर ज़दह हो

لَاَ ظُنُّكَ يٰمُوْسٰى مَسْحُوْرًا ﴿١٠١﴾

(तुम्हें जादू कर दिया गया है)।

قَالَ لَقَدْ عَلِمْتَ مَآ اَنْزَلَ هٰٓؤُلَآءِ اِلَّا رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ بَصَآئِرَ ۚ وَ اِنِّيْ لَاَ ظُنُّكَ يٰفِرْعَوْنُ مَثْبُوْرًا ﴿١٠٢﴾

102. मूसा(अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया : तू (दिलसे) जानता है कि इन निशानियोंको किसी और ने नहीं उतारा मगर आस्मानों और ज़मीनके रबने इब्रतो बसीरत बना कर, और मैं तो येही ख़याल करता हूं कि ऐ फ़िरऔन! तुम हलाक ज़दा हो (तू जल्दी हलाक हुवा चाहता है)।

فَاَرَادَ اَنْ يَّسْتَفِزَّهُمْ مِّنَ الْاَرْضِ فَاَغْرَقْنٰهُ وَمَنْ مَّعَهٗ جَمِيْعًا ﴿١٠٣﴾ لَا

103. फिर (फ़िरऔनने) इरादा किया कि उनके (या'नी मूसा (अलैहिस्सलाम) और उनकी क़ौमको) सर ज़मीने (मिस्र) से उखाड़ कर फेंक दे पस हमने उसे और जो उसके साथ थे सबको ग़र्क़ कर दिया।

وَّ قُلْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ لِبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اسْكُنُوا الْاَرْضَ فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ الْاٰخِرَةِ جِئْنَا بِكُمْ لَفِيْفًا ﴿١٠٤﴾ ؕ

104. और हमने उसके बाद बनी इसराईल से फ़रमाया : तुम उस मुल्कमें आबाद हो जाओ फिर जब आख़िरतका वा'दा आ जाएगा (तो) हम तुम सब को इकट्ठा समेट कर ले जाएंगे।

وَ بِالْحَقِّ اَنْزَلْنٰهُ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ ؕ وَ مَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّ نَذِيْرًا ﴿١٠٥﴾

105. और हक़के साथ ही हमने इस (क़ुरआन) को उतारा है और हक़ ही के साथ वोह उतरा है, और (ऐ हबीबे मुकर्रम!) हमने आपको ख़ुश ख़बरी सुनानेवाला और डर सुनानेवाला ही बना कर भेजा है।

وَقُرْاٰنًا فَرَقْنٰهُ لِتَقْرَاَهٗ عَلَى النَّاسِ عَلٰى مُكْثٍ وَّ نَزَّلْنٰهُ تَنْزِيْلًا ﴿١٠٦﴾

106.और क़ुरआनको हमने जुदा जुदा करके उतारा ताकि आप उसे लोगों पर ठहर ठहर कर पढ़ें और हमने उसे रफ़्ता रफ़्ता (हालात और मसालेहके मुताबिक़) तदरीजन उतारा है।

قُلْ اٰمِنُوْا بِهٖٓ اَوْ لَا تُؤْمِنُوْا ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهٖٓ اِذَا يُتْلٰى عَلَيْهِمْ يَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ سُجَّدًا ﴿١٠٧﴾ لَا

107.फ़रमा दीजिए : तुम इस पर ईमान लाओ या ईमान न लाओ, बेशक जिन लोगोंको इससे क़ब्ल इल्मे (किताब) अता किया गया था जब येह (क़ुरआन) उन्हें पढ़ कर सुनाया जाता है वोह ठोड़ियों के बल सज्दे में गिर पड़ते हैं।

وقفلازم

وَّيَقُوْلُوْنَ سُبْحٰنَ رَبِّنَآ اِنْ كَانَ وَعْدُ رَبِّنَا لَمَفْعُوْلًا ﴿١٠٨﴾

108. और केहते हैं : हमारा रब पाक है, बेशक हमारे रबका वा'दा पूरा हो कर ही रेहना था।

وَ يَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ يَبْكُوْنَ وَ يَزِيْدُهُمْ خُشُوْعًا ﴿١٠٩﴾ السجدة

109. और ठोडियों के बल गिर्या-व-ज़ारी करते हुऐ गिर जाते हैं, और येह (क़ुरआन) उनके ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ में मज़ीद इज़ाफ़ा करता चला जाता है।

السجدة ٣

قُلِ ادْعُوا اللّٰهَ اَوِادْعُوا الرَّحْمٰنَ ؕ اَيًّا مَّا تَدْعُوْا فَلَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ۚ وَلَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتْ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيْلًا ﴿١١٠﴾

110. फ़रमा दीजिए कि अल्लाहको पुकारो या रहमानको पुकारो, जिस नामसे भी पुकारते हो (सब) अच्छे नाम उसीके हैं, और न अपनी नमाज़ (में क़िराअत) बुलंद आवाज़ से करें और न बिल्कुल आहिस्ता पढ़ें और दोनों के दरमियान (मो'तदिल) रास्ता इख़्तियार फ़रमाएं।

وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّ لَمْ يَكُنْ لَّهٗ شَرِيْكٌ فِي الْمُلْكِ وَ لَمْ يَكُنْ لَّهٗ وَلِيٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيْرًا ﴿١١١﴾ ع ١٢ ١١ ١٢

111. और फ़रमाइए कि सब ता'रीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं जिसने न तो (अपने लिए) कोई बेटा बनाया और न ही (उसकी) सल्तनतो फ़रमां रवाई में कोई शरीक है और न कमज़ोरी के बाइस उसका कोई मददगार है (ऐ ह़बीब!) आप उसीको बुज़ुर्गतर जान कर उसकी ख़ूब बड़ाई (बयान) करते रहें।

आयातुहा 110 — 18 सूरतुल कह्फ़ि मक्किय्यतुन 29 — रुकूआ़तुहा 12

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फरमानेवाला है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ عَلٰى عَبْدِهِ الْكِتٰبَ وَلَمْ يَجْعَلْ لَّهٗ عِوَجًا ؕ ﴿١﴾ سكتة

1. तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं जिसने अपने (मह़बूबो मुक़र्रब) बंदे पर किताबे (अ़ज़ीम) नाज़िल फ़रमाई और इसमें कोई कजी न रखी।

قَيِّمًا لِّيُنْذِرَ بَاْسًا شَدِيْدًا مِّنْ

2. (इसे) सीधा और मो'तदिल (बनाया) ताकि वोह

لَّدُنْهُ وَيُبَشِّرَ الْمُؤْمِنِيْنَ الَّذِيْنَ
يَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ اَجْرًا
حَسَنًا ۙ﴿۲﴾

(मुन्किरीन को) अल्लाहकी तरफ़से (आनेवाले) शदीद अ़ज़ाब से डराए और मोमिनीनको जो नेक आ'माल करते हैं ख़ुश ख़बरी सुनाए कि उनके लिए बेहतर अज्र (जन्नत) है।

مَّاكِثِيْنَ فِيْهِ اَبَدًا ۙ﴿۳﴾

3. जिसमें वोह हमेशा रहेंगे।

وَّيُنْذِرَ الَّذِيْنَ قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ
وَلَدًا ﴿۴﴾

4. और (नीज़) उन लोगों को डराएं जो केहते हैं कि अल्लाहने (अपने लिए) लड़का बना रखा है।

مَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ وَّلَا لِاٰبَآئِهِمْ ؕ
كَبُرَتْ كَلِمَةً تَخْرُجُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ ؕ
اِنْ يَّقُوْلُوْنَ اِلَّا كَذِبًا ﴿۵﴾

5. न इसका कोई इ़ल्म उन्हें है और न उनके बापदादा को था, (येह) कितना बड़ा बोल है जो उनके मुंहसे निकल रहा है, वोह (सरासर) झूट के सिवा कुछ केहते ही नहीं।

فَلَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ
اِنْ لَّمْ يُؤْمِنُوْا بِهٰذَا الْحَدِيْثِ
اَسَفًا ﴿۶﴾

6. (ऐ ह़बीबे मुकर्रम !) तो क्या आप उनके पीछे शिद्दते ग़ममें अपनी जाने (अ़ज़ीज़ भी) घुला देंगे अगर वोह इस कलामे (रब्बानी) पर ईमान न लाए।

اِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْاَرْضِ زِيْنَةً
لَّهَا لِنَبْلُوَهُمْ اَيُّهُمْ اَحْسَنُ
عَمَلًا ﴿۷﴾

7. और बेशक हमने उन तमाम चीजोंको जो ज़मीन पर हैं इसके लिए बाइ़से ज़ीनत (व आराइश) बनाया ताकि हम उन लोगोंको (जो ज़मीन के बासी हैं) आज़माएं कि उनमें से ब-ए'तिबारे अ़मल कौन बेहतर है।

وَ اِنَّا لَجٰعِلُوْنَ مَا عَلَيْهَا صَعِيْدًا
جُرُزًا ﴿۸﴾ؕ

8. और बेशक हम इन (तमाम) चीज़ोंको जो इस (रूए ज़मीन) पर हैं (नाबूद करके) बंजर मेदान बना देनेवाले हैं।

اَمْ حَسِبْتَ اَنَّ اَصْحٰبَ الْكَهْفِ
وَالرَّقِيْمِ ۙ كَانُوْا مِنْ اٰيٰتِنَا عَجَبًا ﴿۹﴾

9. क्या आपने येह ख़याल क़िया है कि कहफ़ो रक़ीम (या'नी ग़ार और लौहे ग़ार या वादिए रक़ीम) वाले हमारी (क़ुदरतकी) निशानियों में से (कितनी) अ़जीब निशानी थे।

اِذْ اَوَى الْفِتْيَةُ اِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوْا

10.(वोह वक़्त याद कीजिए) जब चंद नौजवान ग़ारमें

رَبَّنَآ اٰتِنَا مِنۡ لَّدُنۡكَ رَحۡمَةً وَّ
هَيِّئۡ لَنَا مِنۡ اَمۡرِنَا رَشَدًا ﴿۱۰﴾

पनाह गुर्जी हुए तो उन्होंने कहा : ऐ हमारे रब ! हमें अपनी बारगाहसे रहमत अता फ़रमा और हमारे काममें राहयाबी (के अस्बाब) मुहय्या फ़रमा।

فَضَرَبۡنَا عَلٰٓى اٰذَانِهِمۡ فِى الۡـكَهۡفِ
سِنِيۡنَ عَدَدًا ﴿۱۱﴾

11. पस हमने उस ग़ारमें गिनती के चंद साल उनके कानों पर थपकी दे कर (उन्हें सुला दिया)।

ثُمَّ بَعَثۡنٰهُمۡ لِنَعۡلَمَ اَىُّ الۡحِزۡبَيۡنِ
اَحۡصٰى لِمَا لَبِثُوۡۤا اَمَدًا ﴿۱۲﴾

ع ۱۲/۱۳

120. फिर हमने उन्हें उठा दिया कि देखें दोनों गिरोहोंमें से कौन उस (मुद्दत) को सहीह़ शुमार करनेवाला है जो वोह (ग़ारमें) ठेहरे रहे।

نَحۡنُ نَقُصُّ عَلَيۡكَ نَبَاَهُمۡ
بِالۡحَـقِّ ؕ اِنَّهُمۡ فِتۡيَةٌ اٰمَنُوۡا بِرَبِّهِمۡ
وَزِدۡنٰهُمۡ هُدًى ﴿۱۳﴾

13. (अब) हम आपको उनका हाल सहीह़ सहीह़ सुनाते हैं, बेशक वोह (चंद) नौजवान थे जो अपने रब पर ईमान लाए और हमने उनके लिए (नूरे) हिदायत में और इज़ाफ़ा फ़रमा दिया।

وَّرَبَطۡنَا عَلٰى قُلُوۡبِهِمۡ اِذۡ قَامُوۡا
فَقَالُوۡا رَبُّنَا رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَ
الۡاَرۡضِ لَنۡ نَّدۡعُوَا۟ مِنۡ دُوۡنِهٖۤ
اِلٰهًا لَّـقَدۡ قُلۡنَاۤ اِذًا شَطَطًا ﴿۱۴﴾

14.और हमने उनके दिलोंको (अपने रब्तो निस्बतसे) मज़बूतो मुस्तह़कम फ़रमा दिया, जब वोह (अपने बादशाह के सामने) खड़े हुए तो केहने लगे : हमारा रब तो आस्मानों और ज़मीन का रब है हम उसके सिवा हरगिज़ किसी (झूटे) मा'बूद की परस्तिश नहीं करेंगे (अगर ऐसा करें तो) उस वक़्त हम ज़रूर ह़क़से हटी हुई बात करेंगे।

هٰٓؤُلَاۤءِ قَوۡمُنَا اتَّخَذُوۡا مِنۡ دُوۡنِهٖۤ
اٰلِهَةً ؕ لَوۡلَا يَاۡتُوۡنَ عَلَيۡهِمۡ
بِسُلۡطٰنٍۢ بَيِّنٍ ؕ فَمَنۡ اَظۡلَمُ مِمَّنِ
افۡتَـرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ﴿۱۵﴾

15. येह हमारी क़ौमके लोग हैं, जिन्होंने उसके सिवा कई मा'बूद बना लिए हैं तो येह उन (के मा'बूद होने) पर कोई वाज़ेह़ सनद क्यों नहीं लाते ? सो उससे बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूटा बोहतान बांधता है।

وَاِذِ اعۡتَزَلۡتُمُوۡهُمۡ وَمَا يَعۡبُدُوۡنَ
اِلَّا اللّٰهَ فَاۡوٗۤا اِلَى الۡـكَهۡفِ يَنۡشُرۡ لَـكُمۡ

16. और (उन नौजवानों ने आपसमें कहा :) जब तुम उनसे और उन (झूटे मा'बूदों) से जिन्हें येह अल्लाहके सिवा

رَبُّكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِهٖ وَ يُهَيِّئْ لَكُمْ مِّنْ اَمْرِكُمْ مِّرْفَقًا ﴿١٦﴾

पूजते हैं कनारा कश हो गए हो तो तुम (उस) ग़ारमें पनाह ले लो, तुम्हारा रब तुम्हारे लिए अपनी रह़मत कुशादह फ़रमा देगा और तुम्हारे लिए तुम्हारे काम में सहूलत मुहय्या फ़रमा देगा।

وَتَرَى الشَّمْسَ اِذَا طَلَعَتْ تَّزٰوَرُ عَنْ كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْيَمِيْنِ وَ اِذَا غَرَبَتْ تَّقْرِضُهُمْ ذَاتَ الشِّمَالِ وَ هُمْ فِيْ فَجْوَةٍ مِّنْهُ ؕ ذٰلِكَ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ ؕ مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۚ وَ مَنْ يُّضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ وَلِيًّا مُّرْشِدًا ﴿١٧﴾ ع ٢ ٥ ١٢

17. और आप देखते हैं जब सूरज तुलूअ़ होता है तो उनके ग़ारसे दाएं जानिब हट जाता है और जब ग़ुरूब होने लगता है तो उनसे बाएं जानिब कतरा जाता है और वोह उस ग़ारके कुशादह मैदान में (लेटे) हैं, येह (सूरज का अपने रास्ते को बदल लेना) अल्लाहकी (कुदरतकी बड़ी) निशानियों में से है, जिसे अल्लाह हिदायत फ़रमा दे सो वोही हिदायत याफ़्ता है, और जिसे वोह गुमराह ठेहरा दे तो आप उसके लिए कोई वली मुर्शिद (या'नी राह दिखाने वाला मददगार) नहीं पाएंगे।

وَتَحْسَبُهُمْ اَيْقَاظًا وَّ هُمْ رُقُوْدٌ ۚ وَّ نُقَلِّبُهُمْ ذَاتَ الْيَمِيْنِ وَذَاتَ الشِّمَالِ ۚ وَكَلْبُهُمْ بَاسِطٌ ذِرَاعَيْهِ بِالْوَصِيْدِ ؕ لَوِ اطَّلَعْتَ عَلَيْهِمْ لَوَلَّيْتَ مِنْهُمْ فِرَارًا وَّ لَمُلِئْتَ مِنْهُمْ رُعْبًا ﴿١٨﴾

18.और (ऐ सुननेवाले!) तू उन्हें (देखे तो) बेदार ख़याल करेगा ह़ालां कि वोह सोए हुए हैं और हम (वक़्फ़ोंके साथ) उन्हें दाएं जानिब और बाएं जानिब करवटें बदलाते रेहते हैं, और उनका कुत्ता (उनकी) चौखट पर अपने दोनों बाज़ू फैलाए (बैठा) है, अगर तू उन्हें झांक कर देख लेता तो उनसे पीठ फेर कर भाग जाता और तेरे दिलमें उनकी देह्शत भर जाती।

وَ كَذٰلِكَ بَعَثْنٰهُمْ لِيَتَسَآءَلُوْا بَيْنَهُمْ ؕ قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ كَمْ لَبِثْتُمْ ؕ قَالُوْا لَبِثْنَا يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ؕ قَالُوْا رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَا لَبِثْتُمْ ؕ فَابْعَثُوْۤا اَحَدَكُمْ بِوَرِقِكُمْ

19. और इसी तरह़ हमने उन्हें उठा दिया ताकि वोह आपसमें दर्याफ़्त करें,(चुनान्चे) उनमें से एक केहनेवालेने कहा : तुम (यहां) कितना अ़र्सा ठेहरे हो? उन्होंने कहा : हम (यहां) एक दिन या उसका (भी) कुछ हिस्सा ठेहरे हैं, (बिल आख़िर) केहने लगे : तुम्हारा रब ही बेहतर जानता है कि तुम (यहां) कितना अ़र्सा ठेहरे हो, सो तुम अपने में से किसी एकको अपना येह सिक्का दे

هٰذِهٖۤ اِلَى الْمَدِيْنَةِ فَلْيَنْظُرْ اَيُّهَاۤ
اَزْكٰى طَعَامًا فَلْيَاْتِكُمْ بِرِزْقٍ مِّنْهُ
وَلْيَتَلَطَّفْ وَلَا يُشْعِرَنَّ بِكُمْ اَحَدًا ﴿١٩﴾

कर शहरकी तरफ़ भेजो फिर वोह देखे कि कौनसा खाना ज़ियादह हलाल और पाकीज़ा है तो उसमें से कुछ खाना तुम्हारे पास ले आए और उसे चाहिए कि (आने जाने और ख़रीदने में) आहिस्तगी और नरमीसे काम ले और किसी एक शख़्स को (भी) तुम्हारी ख़बर न होने दे।

نصف القران باعتبار عدد الحروف بانّ التاءَ بعد الياء من النصف الاول و اللام الثانية من النصف الاخير ١٢

اِنَّهُمْ اِنْ يَّظْهَرُوْا عَلَيْكُمْ
يَرْجُمُوْكُمْ اَوْ يُعِيْدُوْكُمْ فِيْ مِلَّتِهِمْ
وَلَنْ تُفْلِحُوْۤا اِذًا اَبَدًا ﴿٢٠﴾

20. बेशक अगर उन्होंने तुम (से आगाह हो कर तुम) पर दस्त रस पा ली तो तुम्हें संगसार कर डालेंगे या तुम्हें (जब्रन) अपने मज़हब में पलटा लेंगे और (अगर ऐसा हो गया तो) तब तुम हरगिज़ कभी भी फ़लाह नहीं पाओगे।

وَكَذٰلِكَ اَعْثَرْنَا عَلَيْهِمْ لِيَعْلَمُوْۤا
اَنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّاَنَّ السَّاعَةَ
لَا رَيْبَ فِيْهَا ۚ اِذْ يَتَنَازَعُوْنَ
بَيْنَهُمْ اَمْرَهُمْ فَقَالُوا ابْنُوْا عَلَيْهِمْ
بُنْيَانًا ؕ رَبُّهُمْ اَعْلَمُ بِهِمْ ؕ قَالَ
الَّذِيْنَ غَلَبُوْا عَلٰۤى اَمْرِهِمْ
لَنَتَّخِذَنَّ عَلَيْهِمْ مَّسْجِدًا ﴿٢١﴾

21. और इस तरह हमने उन (के हाल) पर उन लोगोंको (जो चंद सदियां बाद के थे) मुत्तला' कर दिया ताकि वोह जान लें कि अल्लाह का वा'दा सच्चा है और येह (भी) कि क़ियामत के आनेमें कोई शक नहीं है । जब वोह (बस्तीवाले) आपसमें उनके मुआमले में झगड़ा करने लगे (जब अस्हाबे कहफ़ वफ़ात पा गए) तो उन्होंने कहा कि उन (के ग़ार) पर एक इमारत (बतौरे यादगार) बना दो, उनका रब उन (के हाल) से खूब वाक़िफ़ है, उन (ईमानवालों) ने कहा जिन्हें उनके मुआमले पर ग़ल्बा हासिल था कि हम उन (के दरवाज़े) पर ज़रूर एक मस्जिद बनाएंगे (ताकि मुसलमान उसमें नमाज पढ़ें और उनकी क़ुर्बतसे खुसूसी बरकत हासिल करें)।

سَيَقُوْلُوْنَ ثَلٰثَةٌ رَّابِعُهُمْ كَلْبُهُمْ ۚ وَ
يَقُوْلُوْنَ خَمْسَةٌ سَادِسُهُمْ كَلْبُهُمْ
رَجْمًا بِالْغَيْبِ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ سَبْعَةٌ
وَّثَامِنُهُمْ كَلْبُهُمْ ؕ قُلْ رَّبِّيْۤ اَعْلَمُ

22.(अब) कुछ लोग कहेंगे : (अस्हाबे कहफ़) तीन थे उनमें से चौथा उनका कुत्ता था, और बा'ज़ कहेंगे : पांच थे उनमें से छठ्ठा उनका कुत्ता था, येह बिन देखे अंदाजे हैं, और बा'ज़ कहेंगे : (वोह) सात थे और उनमें से आँठवां उनका कुत्ता था । फ़रमा दीजिए : मेरा रबही उनकी ता'दाद को खूब जानता है और सिवाए चंद लोगों के उन

بِعِدَّتِهِمْ مَّا يَعْلَمُهُمْ اِلَّا قَلِيْلٌ ۬ۙ قف
فَلَا تُمَارِ فِيْهِمْ اِلَّا مِرَآءً ظَاهِرًا ۠ ص
وَّلَا تَسْتَفْتِ فِيْهِمْ مِّنْهُمْ اَحَدًا ﴿٢٢﴾ ع ٣ ٥ ١٥

(की सहीह़ ता'दाद) का इ़ल्म किसी को नहीं, सो आप किसी से उनके बारे में बह़स न किया करें सिवाए इस क़दर वज़ाह़तके जो ज़ाहिर हो चुकी है और न उनमें से किसी से उन (अस्ह़ाबे कहफ़) के बारे में कुछ दर्याफ़्त करें।

وَلَا تَقُوْلَنَّ لِشَایْءٍ اِنِّیْ فَاعِلٌ
ذٰلِكَ غَدًا ﴿٢٣﴾ لا

23. और किसी भी चीज़की निस्बत येह हरगिज़ न कहा करें कि मैं इस कामको कल करनेवाला हूं।

اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ۫ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ
اِذَا نَسِيْتَ وَقُلْ عَسٰٓى اَنْ يَّهْدِيَنِ
رَبِّیْ لِاَقْرَبَ مِنْ هٰذَا رَشَدًا ﴿٢٤﴾

24. मगर येह कि अगर अल्लाह चाहे (या'नी इन शा अल्लाह केह कर) और अपने रब का ज़िक्र किया करें जब आप भूल जाएं और कहें : उम्मीद है मेरा रब मुझे इससे (भी) क़रीब तर हिदायतकी राह दिखा देगा।

وَلَبِثُوْا فِیْ كَهْفِهِمْ ثَلٰثَ مِائَةٍ
سِنِيْنَ وَازْدَادُوْا تِسْعًا ﴿٢٥﴾

25. और वोह (अस्ह़ाबे कहफ़) अपनी ग़ारमें तीनसौ बरस ठेहरे रहे और उन्होंने (उस पर) नव (साल) और बढ़ा दिए।

قُلِ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا لَبِثُوْا ۚ لَهٗ غَيْبُ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اَبْصِرْ بِهٖ وَ
اَسْمِعْ ؕ مَا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِیٍّ ۫
وَّلَا يُشْرِكُ فِیْ حُكْمِهٖٓ اَحَدًا ﴿٢٦﴾

26. फ़रमा दीजिए : अल्लाह ही बेहतर जानता है कि वोह कितनी मुद्दत (वहां) ठेहरे रहे आस्मानों और ज़मीन की (सब) पोशीदह बातें उसीके इ़ल्म में हैं, क्या खूब देखनेवाला और क्या खूब सुननेवाला है, उसके सिवा उनका न कोई कारसाज़ है और न वोह अपने हुक्ममें किसी को शरीक फ़रमाता है।

وَاتْلُ مَآ اُوْحِیَ اِلَيْكَ مِنْ كِتَابِ
رَبِّكَ ؕۚ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ۚ قف وَلَنْ
تَجِدَ مِنْ دُوْنِهٖ مُلْتَحَدًا ﴿٢٧﴾

27. और आप वोह (कलाम) पढ़ कर सुनाएं जो आपके रब की किताबमें से आपकी तरफ़ वह़ी किया गया है, उसके कलाम को कोई बदलनेवाला नहीं और आप उसके सिवा हरगिज़ कोई जाए पनाह नहीं पाएंगे।

وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ
رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِیِّ يُرِيْدُوْنَ

28. (ऐ मेरे बंदे !) तू अपने आपको उन लोगों की संगत में जमाए रखा कर जो सुब्हो शाम अपने रबको याद करते

وَجْهَهٗ وَ لَا تَعْدُ عَيْنٰكَ عَنْهُمْ ۚ تُرِيْدُ زِيْنَةَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَ لَا تُطِعْ مَنْ اَغْفَلْنَا قَلْبَهٗ عَنْ ذِكْرِنَا وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ وَكَانَ اَمْرُهٗ فُرُطًا ﴿٢٨﴾

हैं उसकी रज़ाके तलबगार रेहते हैं (उसकी दीदके मुतमन्नी और उसका मुखड़ा तकने के आरज़ूमंद हैं) तेरी (मुहब्बत और तवज्जोहकी) निगाहें उन से न हटें, क्या तू (उन फ़कीरोंसे ध्यान हटा कर) दुन्यवी ज़िन्दगीकी आराइश चाहता है, और तू उस शख़्स की इताअ़त (भी) न कर जिसके दिलको हमने अपने ज़िक्रसे ग़ाफ़िल कर दिया है और वोह अपनी हवाए नफ़्सकी पैरवी करता है और उसका ह़ाल हदसे गुज़र गया है।

وَ قُلِ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكُمْ ۫ فَمَنْ شَآءَ فَلْيُؤْمِنْ وَّ مَنْ شَآءَ فَلْيَكْفُرْ ۙ اِنَّاۤ اَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِيْنَ نَارًا ۙ اَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا ؕ وَ اِنْ يَّسْتَغِيْثُوْا يُغَاثُوْا بِمَآءٍ كَالْمُهْلِ يَشْوِى الْوُجُوْهَ ؕ بِئْسَ الشَّرَابُ ؕ وَسَآءَتْ مُرْتَفَقًا ﴿٢٩﴾

29. और फ़रमा दीजिए कि (येह) ह़क़ तुम्हारे रबकी तरफ़से है, पस जो चाहे ईमान ले आए और जो चाहे इन्कार कर दे बेशक हमने ज़ालिमों के लिए (दोज़ख़की) आग तैयार कर रखी है, जिसकी दीवारें उन्हें घेर लेंगी, और अगर वोह (प्यास और तक्लीफ़के बाइ़स) फ़रियाद करेंगे तो उनकी फरियाद रसी ऐसे पानी से की जाएगी जो पिघले हुऐ तांबे की तरह होगा जो उनके चेहरों को भून देगा, कितना बुरा मशरूब है और कितनी बुरी आरामगाह है।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اِنَّا لَا نُضِيْعُ اَجْرَ مَنْ اَحْسَنَ عَمَلًا ﴿٣٠﴾

30.बेशक जो लोग ईमान लाए और नेक अ़मल किए यक़ीनन हम उस शख़्सका अज्र ज़ाए' नहीं करते जो नेक अ़मल करता है।

اُولٰٓئِكَ لَهُمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّ يَلْبَسُوْنَ ثِيَابًا خُضْرًا مِّنْ سُنْدُسٍ وَّ اِسْتَبْرَقٍ مُّتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا عَلَى الْاَرَآئِكِ ؕ نِعْمَ الثَّوَابُ ؕ وَحَسُنَتْ مُرْتَفَقًا ﴿٣١﴾

31. उन लोगों के लिए हमेशा (आबाद) रेहनेवाले बाग़ात हैं (जिनमें) उन (के महल्लात) के नीचे नेहरें जारी हैं उन्हें उन जन्नतों में सोने के कंगन पहनाऐ जाएंगे और वोह बारीक दीबा और भारी अत्लस के (रेश्मी) सब्ज़ लिबास पहनेंगे और पुर तक़ल्लुफ तख़्तों पर तकिए लगाए बैठे होंगे, क्या खूब सवाब है, और कितनी ह़सीन आरामगाह है।

ع ۴ ۹ ۱۲

وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا رَّجُلَيْنِ جَعَلْنَا لِاَحَدِهِمَا جَنَّتَيْنِ مِنْ اَعْنَابٍ وَّحَفَفْنٰهُمَا بِنَخْلٍ وَّجَعَلْنَا بَيْنَهُمَا زَرْعًا ﴿٣٢﴾

32. और आप उनसे उन दोनों शख़्सोंकी मिसाल बयान करें जिनमें से एक के लिए हमने अँगूर के दो बाग़ात बनाए और हमने उन दोनोंको तमाम अतराफ़से खजूरके दरख़्तों के साथ ढांप दिया और हमने उनके दरमियान (सर सब्ज़ो शादाब) खेतियां उगा दीं।

كِلْتَا الْجَنَّتَيْنِ اٰتَتْ اُكُلَهَا وَلَمْ تَظْلِمْ مِّنْهُ شَيْـًٔا ۙ وَّفَجَّرْنَا خِلٰلَهُمَا نَهَرًا ﴿٣٣﴾

33. येह दोनों बाग़ (कसरत से) अपने फल लाए और उनकी (पैदावार) में कोई कमी न रही और हमने उन दोनों (में से हर एक) के दरमियान एक नहर (भी) जारी कर दी।

وَّكَانَ لَهٗ ثَمَرٌ ۚ فَقَالَ لِصَاحِبِهٖ وَهُوَ يُحَاوِرُهٗٓ اَنَا اَكْثَرُ مِنْكَ مَالًا وَّاَعَزُّ نَفَرًا ﴿٣٤﴾

34. और उस शख़्सके पास (उसके सिवा भी) बहुतसे फल (या'नी वसाइल) थे, तो उसने अपने साथी से कहा और वोह उससे तबादिलए ख़याल कर रहा था कि मैं तुझसे मालो दौलत में कहीं ज़ियादह हूं और क़बीला-व-ख़ानदान के लिहाज़ से (भी) ज़ियादह बा इ़ज़्ज़त हूं।

وَدَخَلَ جَنَّتَهٗ وَهُوَ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ ۚ قَالَ مَآ اَظُنُّ اَنْ تَبِيْدَ هٰذِهٖٓ اَبَدًا ۙ ﴿٣٥﴾

35. और वोह (उसे ले कर) अपने बाग़में दाख़िल हुआ (तकब्बुर की सूरतमें) अपनी जान पर ज़ुल्म करते हुए केहने लगा : मैं येह गुमान (ही) नहीं करता कि येह बाग़ तबाह होगा।

وَّمَآ اَظُنُّ السَّاعَةَ قَآئِمَةً ۙ وَّلَئِنْ رُّدِدْتُّ اِلٰى رَبِّيْ لَاَجِدَنَّ خَيْرًا مِّنْهَا مُنْقَلَبًا ﴿٣٦﴾

36. और न ही येह गुमान करता हूं कि क़ियामत क़ाइम होगी और अगर (बिल फ़र्ज़) मैं अपने रबकी तरफ़ लौटाया भी गया तो भी यक़ीनन में उन बाग़ातसे बेहतर पलटने की जगह पाऊंगा।

قَالَ لَهٗ صَاحِبُهٗ وَهُوَ يُحَاوِرُهٗٓ اَكَفَرْتَ بِالَّذِيْ خَلَقَكَ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ سَوّٰىكَ رَجُلًا ﴿٣٧﴾

37. उसके साथीने उससे कहा और वोह उससे तबादिलए ख़याल कर रहा था क्या तूने उस (रब) का इन्कार किया है जिसने तुझे (अव्वलन) मिट्टीसे पैदा किया फिर एक तौलीदी क़तरे से फिर तुझे (जिस्मानी तौर पर) पूरा मर्द बना दिया।

لٰكِنَّا۠ هُوَ اللّٰهُ رَبِّيْ وَلَآ اُشْرِكُ بِرَبِّيْٓ اَحَدًا ﴿٣٨﴾

38. लेकिन मैं (तो येह केहता हूं) कि वोही अल्लाह मेरा रब है और मैं अपने रबके साथ किसीको शरीक नहीं गरदानता।

وَلَوْلَآ اِذْ دَخَلْتَ جَنَّتَكَ قُلْتَ مَا شَآءَ اللّٰهُ ۙ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ ۚ اِنْ تَرَنِ اَنَا اَقَلَّ مِنْكَ مَالًا وَّوَلَدًا ﴿٣٩﴾

39. और जब तू अपने बाग़में दाख़िल हुआ तो तूने क्यों नहीं कहा "मा शा अल्लाहु ला कुव्व-त इल्ला बिल्लाह" (वोही होना है जो अल्लाह चाहे किसी को कुछ ताक़त नहीं मगर अल्लाह की मददसे), अगर तू (इस वक़्त) मुझे मालो औलादमें अपने से कमतर देखता है (तो क्या हुवा)।

فَعَسٰى رَبِّيْٓ اَنْ يُّؤْتِيَنِ خَيْرًا مِّنْ جَنَّتِكَ وَيُرْسِلَ عَلَيْهَا حُسْبَانًا مِّنَ السَّمَآءِ فَتُصْبِحَ صَعِيْدًا زَلَقًا ﴿٤٠﴾ۙ

40. कुछ बईद नहीं कि मेरा रब मुझे तेरे बाग़से बेहतर अ़ता फ़रमाए और उस (बाग) पर आस्मान से कोई अ़ज़ाब भेज दे फिर वोह चटियल चिकनी ज़मीन बन जाए।

اَوْ يُصْبِحَ مَآؤُهَا غَوْرًا فَلَنْ تَسْتَطِيْعَ لَهٗ طَلَبًا ﴿٤١﴾

41. या उसका पानी ज़मीन की गेहराईमें चला जाए फिर तू उसे ह़ासिल करनेकी ताक़तभी न पा सके ।

وَاُحِيْطَ بِثَمَرِهٖ فَاَصْبَحَ يُقَلِّبُ كَفَّيْهِ عَلٰى مَآ اَنْفَقَ فِيْهَا وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا وَيَقُوْلُ يٰلَيْتَنِيْ لَمْ اُشْرِكْ بِرَبِّيْٓ اَحَدًا ﴿٤٢﴾

42. और (इस तकब्बुर के बाइ़स) उसके (सारे) फल (तबाहीमें) घेर लिए गए तो सुब्ह़को वोह उस पूंजी पर जो उसने उस (बाग़ के लगाने) में ख़र्च की थी कफ़े अफ़्सोस मलता रेह गया और वोह बाग़ अपने छप्परों पर गिरा पड़ा था और वोह (सरापा ह़सरतो यास बन कर) केह रहा था : हाए काश ! मैंने अपने रबके साथ किसीको शरीक न ठेहराया होता (और अपने उपर घमंड न किया होता)।

وَلَمْ تَكُنْ لَّهٗ فِئَةٌ يَّنْصُرُوْنَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَمَا كَانَ مُنْتَصِرًا ﴿٤٣﴾ؕ

43. और उसके लिए कोई गिरोह (भी) ऐसा न था जो अल्लाह के मुक़ाबले में उसकी मदद करते और न वोह ख़ुद (ही उस तबाही का) बदला लेने के क़ाबिल था।

هُنَالِكَ الْوَلَايَةُ لِلّٰهِ الْحَقِّ ؕ هُوَ

44. यहां (पता चलता है) कि सब इख़्तियार अल्लाह ही

خَيْرٌ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ عُقْبًا ﴿٤٤﴾ ع

का है (जो) हक़ है, वोही बेहतर है इनाम देने में और वोही बेहतर है अंजाम करने में।

وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا
كَمَآءٍ اَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ
بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ فَاَصْبَحَ هَشِيْمًا
تَذْرُوْهُ الرِّيٰحُ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ
شَیْءٍ مُّقْتَدِرًا ﴿٤٥﴾

45. और आप उन्हें दुन्यवी ज़िन्दगी की मिसाल (भी) बयान कीजिए (जो) उस पानी जैसी है जिसे हमने आस्मानकी तरफ़से उतारा तो उसके बाइस ज़मीन का सब्ज़ा खूब घना हो गया फिर वोह सूखी घास का चूरा बन गया जिसे हवाएं उड़ा ले जाती हैं, और अल्लाह हर चीज़ पर कामिल कुदरतवाला है।

اَلْمَالُ وَالْبَنُوْنَ زِيْنَةُ الْحَيٰوةِ
الدُّنْيَا ۚ وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ
عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ اَمَلًا ﴿٤٦﴾

46. माल और औलाद (तो सिर्फ़) दुन्यवी ज़िन्दगी की ज़ीनत हैं और (हक़ीक़त में) बाक़ी रेहनेवाली (तो) नेकियां (हैं जो) आपके रबके नज़दीक सवाब के लिहाज़ से (भी) बेहतर हैं और आरजू के लिहाज़ से (भी) ख़ूबतर हैं।

وَيَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ وَتَرَى
الْاَرْضَ بَارِزَةً ۙ وَّحَشَرْنٰهُمْ فَلَمْ
نُغَادِرْ مِنْهُمْ اَحَدًا ﴿٤٧﴾ ۚ

47. वोह दिन (क़ियामत का) होगा जब हम पहाड़ों को (रेज़ा रेज़ा करके फ़िज़ा में) चलाएंगे और आप ज़मीन को साफ़ मेदान देखेंगे (उस पर शजर, हजर और हैवानातो नबातात में से कुछ भी न होगा) और हम सब इन्सानों को जमा' फ़रमाएंगे और उनमें से किसीको (भी) नहीं छोड़ेंगे।

وَعُرِضُوْا عَلٰى رَبِّكَ صَفًّا ؕ لَقَدْ
جِئْتُمُوْنَا كَمَا خَلَقْنٰكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ ؗ
بَلْ زَعَمْتُمْ اَلَّنْ نَّجْعَلَ لَكُمْ
مَّوْعِدًا ﴿٤٨﴾

48. और (सब लोग) आपके रबके हुज़ूर क़तार दर क़तार पेश किए जाएंगे, (उनसे कहा जाएगा) बेशक तुम हमारे पास (आज उसी तरह) आए हो जैसा कि हमने तुम्हें पहली बार पैदा किया था बल्कि तुम येह गुमान करते थे कि हम तुम्हारे लिए हरगिज़ वा'दे का वक्त मुक़र्रर ही नहीं करेंगे।

وَوُضِعَ الْكِتٰبُ فَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ
مُشْفِقِيْنَ مِمَّا فِيْهِ وَيَقُوْلُوْنَ

49. और (हर एकके सामने) आ'मालनामा रख दिया जाएगा सो आप मुजरिमों को देखेंगे (वोह) उन (गुनाहों

يٰوَيْلَتٰنَا مَالِ هٰذَا الْكِتٰبِ لَا
يُغَادِرُ صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً اِلَّآ
اَحْصٰىهَا ۚ وَوَجَدُوْا مَا عَمِلُوْا
حَاضِرًا ۭ وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ اَحَدًا ﴿٤٩﴾

ع ٦ ٥ ١٨

और जुर्मों) से ख़ौफ़ज़दा होंगे जो उस (आ'मालनामे) में दर्ज होंगे और कहेंगे : हाए हलाकत ! इस आ'मालनामे को क्या हुवा है इसने न कोई छोटी (बात) छोड़ी है और न कोई बड़ी (बात), मगर इसने (हर हर बातको) शुमार कर लिया है और वोह जो कुछ करते रहे थे (अपने सामने) हाज़िर पाएंगे, और आपका रब किसी पर जुल्म न फ़रमाएगा।

وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰۗىِٕكَةِ اسْجُدُوْا
لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ۭ
كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ عَنْ اَمْرِ
رَبِّهٖ ۭ اَفَتَتَّخِذُوْنَهٗ وَذُرِّيَّتَهٗٓ
اَوْلِيَاۗءَ مِنْ دُوْنِيْ وَهُمْ لَكُمْ عَدُوٌّ ۭ
بِئْسَ لِلظّٰلِمِيْنَ بَدَلًا ﴿٥٠﴾

50. और (वोह वक़्त याद कीजिऐ) जब हमने फ़रिश्तोंसे फ़रमाया कि तुम आदम (عليه السلام) को सज्दए (ता'ज़ीम) करो सो उन (सब) ने सज्दह किया सिवाए इबलीसके, वोह (इब्लीस) जिन्नात में से था तो वोह अपने रबकी ताअ़त से बाहर निकल गया, क्या तुम उसको और उसकी औलाद को मुझे छोड़ कर दोस्त बना रहे हो हालांकि वोह तुम्हारे दुश्मन हैं, येह ज़ालिमों के लिए क्या ही बुरा बदल है (जो उन्होंने मेरी जगह मुन्तख़ब किया है)।

مَآ اَشْهَدْتُّهُمْ خَلْقَ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ وَلَا خَلْقَ اَنْفُسِهِمْ ۠ وَمَا
كُنْتُ مُتَّخِذَ الْمُضِلِّيْنَ عَضُدًا ﴿٥١﴾

51. मैंने न (तो) उन्हें आस्मानों और ज़मीनकी तख़्लीक़ पर (मुआ़विनत या गवाही के लिए) बुलाया था और न ख़ुद उनकी अपनी तख़्लीक़ (के वक़्त), और न (ही) मैं ऐसा था कि गुमराह करनेवालोंको (अपना) दस्तो बाज़ू बनाता।

وَيَوْمَ يَقُوْلُ نَادُوْا شُرَكَاۗءِيَ
الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ
يَسْتَجِيْبُوْا لَهُمْ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ
مَّوْبِقًا ﴿٥٢﴾

52. और वोह दिन (याद करो जब) अल्लाह फ़रमाएगा उन्हें पुकारो जिन्हें तुम मेरा शरीक गुमान करते थे सो वोह उन्हें बुलाएंगे मगर वोह उन्हें कोई जवाब न देंगे और हम उनके दरमियान (एक वादिए जहन्नम को) हलाकत की जगह बना देंगे।

وَرَاَ الْمُجْرِمُوْنَ النَّارَ فَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ
مُّوَاقِعُوْهَا وَلَمْ يَجِدُوْا عَنْهَا
مَصْرِفًا ﴿٥٣﴾

ع ٧ ٤ ١٩

53. और मुजरिम लोग आतिशे दोज़ख़को देखेंगे तो जान लेंगे कि वोह यक़ीनन उसीमें गिरनेवाले हैं और वोह उससे गुरेज़ की कोई जगह न पा सकेंगे।

وَ لَقَدْ صَرَّفْنَا فِیْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لِلنَّاسِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ؕ وَ كَانَ الْاِنْسَانُ اَكْثَرَ شَیْءٍ جَدَلًا ﴿۵۴﴾

54. और बेशक हमने इस क़ुरआनमें लोगोंके लिए हर तरह़की मिसालको (अंदाज़ बदल बदल कर) बार बार बयान किया है, और इन्सान झगड़ने में हर चीज़से बढ़ कर है।

وَ مَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ یُّؤْمِنُوْۤا اِذْ جَآءَهُمُ الْهُدٰى وَ یَسْتَغْفِرُوْا رَبَّهُمْ اِلَّاۤ اَنْ تَاْتِیَهُمْ سُنَّةُ الْاَوَّلِیْنَ اَوْ یَاْتِیَهُمُ الْعَذَابُ قُبُلًا ﴿۵۵﴾

55.और लोगों को जबकि उनके पास हिदायत आ चुकी थी किसीने (इस बातसे) मना' नहीं किया था कि वोह ईमान लाएं और अपने रबसे मग़फ़िरत तलब करें सिवाए उस (इन्तिज़ार) के कि उन्हें अगले लोगों का तरीक़ए (हलाकत) पेश आए या अ़ज़ाब उनके सामने आ जाए।

وَ مَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِیْنَ اِلَّا مُبَشِّرِیْنَ وَ مُنْذِرِیْنَ ۚ وَ یُجَادِلُ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا بِالْبَاطِلِ لِیُدْحِضُوْا بِهِ الْحَقَّ وَ اتَّخَذُوْۤا اٰیٰتِیْ وَ مَاۤ اُنْذِرُوْا هُزُوًا ﴿۵۶﴾

56. और हम रसूलों को नहीं भेजा करते मगर (लोगोंको) ख़ुशख़बरी सुनानेवाले और डर सुनानेवाले (बना कर), और काफ़िर लोग (उन रसूलों से) बेहूदा बातों के सहारे झगड़ा करते हैं ताकि उस (बातिल) के ज़रीए ह़क़ को ज़ाइल कर दें और वोह मेरी आयतोंको और उस (अ़ज़ाब) को जिससे वोह डराए जाते हैं हंसी मज़ाक़ बना लेते हैं।

وَ مَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِاٰیٰتِ رَبِّهٖ فَاَعْرَضَ عَنْهَا وَ نَسِیَ مَا قَدَّمَتْ یَدٰهُ ؕ اِنَّا جَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ یَّفْقَهُوْهُ وَ فِیْۤ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ؕ وَ اِنْ تَدْعُهُمْ اِلَى الْهُدٰى فَلَنْ یَّهْتَدُوْۤا اِذًا اَبَدًا ﴿۵۷﴾

57. और उस शख़्ससे बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा जिसे उसके रब की निशानियां याद दिलाई गईं तो उसने उनसे रू गरदानी की और उन (बद आ'मालियों) को भूल गया जो उसके हाथ आगे भेज चुके थे, बेशक हमने उनके दिलों पर पर्दे डाल दिए हैं कि वोह उस ह़क़ को समझ (न) सकें और उनके कानोंमें बोझ पैदा कर दिया है (कि वोह उस ह़क़ को सुन न सकें), और अगर आप उन्हें हिदायत की तरफ़ बुलाएं तो वोह कभी भी क़त्अ़न हिदायत नहीं पाएंगे।

وَ رَبُّكَ الْغَفُوْرُ ذُو الرَّحْمَةِ ؕ لَوْ یُؤَاخِذُهُمْ بِمَا كَسَبُوْا لَعَجَّلَ لَهُمُ

58. और आप का रब बड़ा बख़्शनेवाला साह़िबे रह़मत है, अगर वोह उनके किए पर उनका मुवाख़ज़ा फ़रमाता तो उन पर यक़ीनन जल्द अ़ज़ाब भेजता, बल्कि उनके

الْعَذَابَ ؕ بَلْ لَّهُمْ مَّوْعِدٌ لَّنْ يَّجِدُوْا مِنْ دُوْنِهٖ مَوْئِلًا ﴿٥٨﴾

लिए (तो) वक़्ते वा'दा (मुक़र्रर) है (जब वोह वक़्त आएगा तो) उसके सिवा हरगिज़ कोई जाए पनाह नहीं पाऐंगे।

وَتِلْكَ الْقُرٰٓى اَهْلَكْنٰهُمْ لَمَّا ظَلَمُوْا وَجَعَلْنَا لِمَهْلِكِهِمْ مَّوْعِدًا ﴿٥٩﴾ ع ٨ ٦ ٢٠

59- और येह बस्तियां हैं हमने जिनके रेहनेवालों को हलाक कर डाला जब उन्होंने ज़ुल्म किया और हमने उनकी हलाकत के लिए एक वक़्त मुक़र्रर कर रखा था।

وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِفَتٰىهُ لَآ اَبْرَحُ حَتّٰٓى اَبْلُغَ مَجْمَعَ الْبَحْرَيْنِ اَوْ اَمْضِيَ حُقُبًا ﴿٦٠﴾

60. और (वोह वाक़िआ भी याद कीजिए) जब मूसा (علیہ السلام) ने अपने (जवां साल साथी और) ख़ादिम (यूशा' बिन नून علیہ السلام) से कहा : मैं (पीछे) नहीं हट सक्ता यहां तककि मैं दो दरियाओंके संगमकी जगह तक पहोंच जाऊं या मुद्दतों चलता रहूं।

فَلَمَّا بَلَغَا مَجْمَعَ بَيْنِهِمَا نَسِيَا حُوْتَهُمَا فَاتَّخَذَ سَبِيْلَهٗ فِي الْبَحْرِ سَرَبًا ﴿٦١﴾

61. सो जब वोह दोनों दो दरियाओंके दरमियान संगम पर पहुंचे तो वोह दोनों अपनी (मछली) (वहीं) भूल गए पस वोह (तली हुई मछली ज़िन्दा हो कर) दरिया में सुरंगकी तरह अपना रास्ता बनाते हुऐ (निकल गई)।

فَلَمَّا جَاوَزَا قَالَ لِفَتٰىهُ اٰتِنَا غَدَآءَنَا ۫ لَقَدْ لَقِيْنَا مِنْ سَفَرِنَا هٰذَا نَصَبًا ﴿٦٢﴾

62. फिर जब वोह दोनों आगे बढ़ गए (तो) मूसा (علیہ السلام) ने अपने ख़ादिमसे कहा : हमारा खाना हमारे पास लाओ बेशक हमने अपने इस सफ़रमें बड़ी मशक़्क़त का सामना किया है।

قَالَ اَرَءَيْتَ اِذْ اَوَيْنَآ اِلَى الصَّخْرَةِ فَاِنِّيْ نَسِيْتُ الْحُوْتَ ۫ وَمَآ اَنْسٰنِيْهُ اِلَّا الشَّيْطٰنُ اَنْ اَذْكُرَهٗ ۚ وَاتَّخَذَ سَبِيْلَهٗ فِي الْبَحْرِ ۖ عَجَبًا ﴿٦٣﴾

63. (ख़ादिम ने) कहा : क्या आपने देखा जब हमने पथ्थरके पास आराम किया था तो मैं (वहां) मछली भूल गया था, और मुझे येह किसीने नहीं भुलाया सिवाए शैतानके कि मैं आपसे उसका ज़िक्र करूं, और उस (मछली) ने तो (ज़िन्दा हो कर)दरिया में अ़जीब तरीक़ेसे अपना रास्ता बना लिया था (और वोह ग़ाइब हो गई थी)।

قَالَ ذٰلِكَ مَا كُنَّا نَبْغِ ۖ فَارْتَدَّا

64. मूसा (علیہ السلام) ने कहा : येही वोह (मुक़ाम) है हम

عَلٰۤى اٰثَارِهِمَا قَصَصًا ۙ ﴿٦٤﴾

जिसे तलाश कर रहे थे, पस दोनों अपने क़दमोंके निशानात पर (वोही रास्ता) तलाश करते हुऐ (उसी मुक़ाम पर) वापस पलट आए।

فَوَجَدَا عَبْدًا مِّنْ عِبَادِنَاۤ اٰتَيْنٰهُ
رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَ عَلَّمْنٰهُ مِنْ
لَّدُنَّا عِلْمًا ﴿٦٥﴾

65. तो दोनों ने (वहां) हमारे बंदों में से एक (ख़ास) बंदे (ख़िज़्र عليه السلام) को पा लिया जिसे हमने अपनी बारगाहसे (ख़ुसूसी) रहमत अ़ता की थी और हमने उसे अपना इ़ल्मे लदुन्नी (या'नी असरारो मआ़रिफ़ का इल्हामी इ़ल्म) सिखाया था।

قَالَ لَهٗ مُوْسٰى هَلْ اَتَّبِعُكَ عَلٰۤى
اَنْ تُعَلِّمَنِ مِمَّا عُلِّمْتَ رُشْدًا ﴿٦٦﴾

66. उससे मूसा (عليه السلام) ने कहा : क्या मैं आपके साथ इस (शर्त) पर रेह सक्ता हूं कि आप मुझे (भी) उस इ़ल्ममें से कुछ सिखाएंगे जो आपको बग़र्ज़े इर्शाद सिखाया गया है।

قَالَ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِيَ
صَبْرًا ﴿٦٧﴾

67. उस (ख़िज़्र عليه السلام) ने कहा : बेशक आप मेरे साथ रेह कर हरगिज़ सब्र न कर सकेंगे।

وَ كَيْفَ تَصْبِرُ عَلٰى مَا لَمْ تُحِطْ بِهٖ
خُبْرًا ﴿٦٨﴾

68. और आप इस (बात) पर कैसे सब्र कर सक्ते हैं जिसे आप (पूरे तौर पर) अपने अहा़तऐ इ़ल्म में नहीं लाए होंगे?

قَالَ سَتَجِدُنِيْۤ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ صَابِرًا
وَّ لَاۤ اَعْصِيْ لَكَ اَمْرًا ﴿٦٩﴾

69. मूसा (عليه السلام) ने कहा : आप इन शा अल्लाह मुझे ज़रूर साबिर पाएंगे और मैं आपकी किसी बातकी ख़िलाफ़ वर्ज़ी नहीं करूंगा।

قَالَ فَاِنِ اتَّبَعْتَنِيْ فَلَا تَسْـَٔلْنِيْ
عَنْ شَيْءٍ حَتّٰۤى اُحْدِثَ لَكَ مِنْهُ
ذِكْرًا ﴿٧٠﴾ ع ٩ ١١ ٢١

70. (ख़िज़्र عليه السلام ने) कहा : पस अगर आप मेरे साथ रहें तो मुझसे किसी चीज़की बाबत सवाल न करें यहां तक कि मैं ख़ुद आपसे उसका ज़िक्र कर दूं।

فَانْطَلَقَا ٙ وقفة حَتّٰۤى اِذَا رَكِبَا فِي
السَّفِيْنَةِ خَرَقَهَا ؕ قَالَ اَخَرَقْتَهَا

71. पस दोनों चल दिए यहां तक कि जब दोनों कश्ती में सवार हुए (तो ख़िज़्र عليه السلام ने) उस (कश्ती) में शिगाफ़

لِتُغْرِقَ اَهْلَهَا ۚ لَقَدْ جِئْتَ شَيْـًٔا
اِمْرًا ﴿٧١﴾
قَالَ اَلَمْ اَقُلْ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ
مَعِيَ صَبْرًا ﴿٧٢﴾
قَالَ لَا تُؤَاخِذْنِيْ بِمَا نَسِيْتُ وَ
لَا تُرْهِقْنِيْ مِنْ اَمْرِيْ عُسْرًا ﴿٧٣﴾
فَانْطَلَقَا ۖ حَتّٰۤى اِذَا لَقِيَا غُلٰمًا
فَقَتَلَهٗ ۙ قَالَ اَقَتَلْتَ نَفْسًا زَكِيَّةًۢ
بِغَيْرِ نَفْسٍ ؕ لَقَدْ جِئْتَ شَيْـًٔا
نُّكْرًا ﴿٧٤﴾

कर दिया, मूसा عليه السلام ने कहा : क्या आपने उसे इस लिए (शिगाफ़ करके) फ़ाड़ डाला है कि आप कश्तीवालों को ग़र्क़ कर दें, बेशक आपने बड़ी अ़जीब बात की।

72. (ख़िज़र عليه السلام ने) कहा : क्या मैंने नहीं कहा था कि आप मेरे साथ रेह कर हरगिज़ सब्र नहीं कर सकेंगे ?

73. मूसा عليه السلام ने कहा : आप मेरी भूल पर मेरी गिरफ़्त न करें और मेरे (इस) मुआ़मले में मुझे ज़ियादह मुश्किल में न डालें।

74. फिर वोह दोनों चल दिए यहां तक कि दोनों एक लड़के से मिले तो (ख़िज़र عليه السلام ने) उसे क़त्ल कर डाला मूसा (عليه السلام) ने कहा : क्या आपने बेगुनाह जानको बिग़ैर किसी जान (के बदले) के क़त्ल कर दिया है, बेशक आपने बड़ा ही सख़्त काम किया है।